गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 215
दि. 06.12.2025,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

चार दिन में 1700 फ्लाइटें ठप, हवाई सफर में हाहाकार: इंडिगो संकट ने पूरे देश को थाम दिया

(जीएनएस)। देश का हवाई यातायात बीते चार दिनों में जिस तरह की उथल-पुथल से गुजरा, उसने यात्रियों, एयरलाइनों, एयरपोर्टों और सरकार—सभी को एक साथ झकझोर दिया है। भारत की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो पर अचानक टूटा यह संकट इतना गहरा था कि 1700 से ज्यादा उड़ानें रद्द हो गईं, हजारों लोग एयरपोर्ट्स पर फंसे रहे, टिकटों की कीमतें आसमान पर चढ़ गईं और सरकार को अपना ही आदेश वापस लेना पड़ा। शुक्रवार की सुबह से रात तक देश के कई बड़े एयरपोर्ट्स पर जो दृश्य दिखे, वे किसी भी आधुनिक विमानन प्रणाली पर बड़ा सवाल खड़ा करते हैं—काउंटरों पर चीखते यात्री, स्टाफ पर आरोप, लंबी कतारें, सामान लेकर लौटते परिवार, और मोबाइल पर लगातार आने वाले रद्दीकरण संदेश।

इंडिगो का यह संकट एक नए नियम से शुरू हुआ, जिसमें पायलटों के साप्ताहिक विश्राम का समय अचानक 12 घंटे से बढ़ाकर 48 घंटे कर दिया गया था। यह नियम सुरक्षा बढ़ाने के लिए बनाया गया था, लेकिन उसकी घोषणा, लागू करने का समय और अचानक आने वाले परिचालन झटकों ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिसे किसी ने अनुमान नहीं किया था। पायलटों की शेड्यूलिंग गड़बड़ा गई, क्रू सूची उलट-पुलट हो गई और इतनी बड़ी एयरलाइन की उड़ानें एक के बाद एक कैंसिल होती रहीं। इसे पायलट धीरज जैसे एक सामान्य उदाहरण से समझा जा सकता है। धीरज सोमवार से गुरुवार तक उड़ानें भरता है। उसे शुक्रवार और शनिवार की छुट्टी मंजूर होती है। पुराने नियम में यह छुट्टी और साप्ताहिक आराम मिला कर गिन ली जाती थी, और वह रविवार से दोबारा उड़ान भर सकता था। लेकिन नए नियम में छुट्टी और वीकली रेस्ट अलग-अलग हो गए—यानी छुट्टी खत्म होने के बाद भी धीरज को अनिवार्य 48 घंटे का आराम पूरा करना

था। वह रविवार और सोमवार को उड़ान नहीं भर सकता था। हजारों पायलट्स की इसी स्थिति ने इंडिगो के पूरे ऑपरेशन को जाम कर दिया। पायलट उपलब्ध थे, पर उड़ान की अनुमति नहीं थी।

एयरलाइन ने अपनी योजना में खामी स्वीकार करते हुए कहा कि उनकी ओर से गलत पारदर्शिता, गलत गणना और शेड्यूलिंग की गलत रणनीति ने समस्या को और बड़ा कर दिया। नतीजा यह हुआ कि शुक्रवार को अकेले 1000 से ज्यादा उड़ानें रद्द करनी पड़ीं—एक ऐसा दिन जिसे भारतीय विमानन इतिहास की सबसे बड़ी परिचालन विफलताओं में गिना जाएगा। इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स को यात्रियों से सार्वजनिक माफी मांगनी पड़ी और यह कहना पड़ा कि ऑपरेशन 10 से 15 दिसंबर के बीच ही सामान्य हो सकेंगे।

सरकार पर दबाव इतना बढ़ा कि नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) ने तत्काल प्रभाव से अपना आदेश वापस ले लिया और 10 फरवरी 2026 तक नए नियमों से राहत दे दी। इसके साथ ही एक उच्च स्तरीय चार सदस्यीय जांच समिति गठित कर दी गई, जो 15 दिनों में यह रिपोर्ट देगी कि आखिर इतने बड़े पैमाने पर देरी और रद्दीकरण क्यों हुए, किन निर्णयों ने स्थिति बिगाड़ी और आगे क्या सुधार आवश्यक हैं।

यात्रियों के लिए यह संकट सिर्फ यात्रा न हो पाने का नहीं बल्कि भारी वित्तीय नुकसान का भी कारण बना। चूंकि इंडिगो की घरेलू उड़ानों का हिस्सा 60% से अधिक है, इसलिए उसके ठप होने का असर तुरंत पूरे सिस्टम पर पड़ा। अन्य एयरलाइनों ने किराए कई गुना बढ़ा दिए। दिल्ली–बेंगलुरु के साधारण दिनों में 4,000 से 6,000 रुपये के बीच मिलने वाले टिकट 40,000 से ऊपर चला गया, और कुछ उड़ानों का किराया 80,000 तक पहुंच गया। सामान्य से दस गुना अधिक किराए ने यात्रियों को हैरान कर दिया।

गोरखपुर के मुनीब चौरसिया जैसे हजारों यात्रियों की कहानी इस संकट की असल तस्वीर बयान करती है। वह अपनी मां और एक दोस्त के साथ मुंबई की फ्लाइट पकड़ने चार बजे एयरपोर्ट पहुंचे। उन्हें बताया गया कि फ्लाइट देर से जाएगी। कई घंटे इंतजार के बाद रात 9 बजे एयरलाइन ने घोषणा की कि उड़ान रद्द है और अगली सुबह भेजा जाएगा। अगले दिन फिर वही स्थिति दोहराई गई—फ्लाइट दोबारा रद्द। गोरखपुर जैसे शहर में एयरपोर्ट का एक चक्कर ही 2,000 रुपये तक पड़ता है। मुनीब चार बार एयरपोर्ट गए, 8,000 रुपये आने–जाने में खर्च हो गए, 10,000 रुपये टिकट के थे, और जब दूसरे एयरलाइन के टिकट 53,000 प्रति व्यक्ति दिखे, तो मजबूर होकर ट्रेन का टिकट लेना पड़ा। उनका कहना था कि एयरपोर्ट की हालत ऐसी थी जैसे किसी ने एक झटके में पूरा सिस्टम बंद कर दिया हो—लोग इधर-उधर भाग रहे थे, कोई जानकारी नहीं दे रहा था, और लाइनें लगातार बढ़ती जा रही थीं।

इंडिगो के पास 434 विमान, 5456 पायलट, 10,212 केबिन क्रू और 41,000 से अधिक कर्मचारी हैं। इतना विशाल नेटवर्क होने के बावजूद एक नियम की अचानक लागू करने की प्रक्रिया से ऐसा संकट आ जाना यह बताता है कि आधुनिक विमानन प्रणाली किस तरह नाजुक संतुलन पर चलती है। थोड़ी सी गड़बड़ी का असर लाखों लोगों पर पड़ता है और पूरे देश की यात्रा व्यवस्था चरमरा जाती है। हालांकि सरकार और एयरलाइन दोनों यह दावा कर रहे हैं कि स्थिति तीन से चार दिनों में सामान्य हो जाएगी, लेकिन इस घटना ने भारतीय विमानन की तैयारी, पारदर्शिता, नियमों की व्यवहारिकता और यात्रियों के अधिकारों पर नए सिरे से बहस छेड़ दी है। यह सवाल अब और तीखे हो गए हैं कि इतने बड़े स्तर पर उड़ान रद्दीकरण कैसे हो गया, क्या प्लानिंग कमजोर थी, क्या नियम अचानक बनाने की बजाय चरणबद्ध तरीके से लागू नहीं किए जा सकते थे, और क्या इतनी निर्भरता एक ही एयरलाइन पर सुरक्षित है।

फिलहाल देश इंतजार कर रहा है कि इंडिगो अपने पंखों को फिर से स्थिर कर पाएगी या नहीं, और क्या आने वाले दिनों में यात्रा सामान्य होगी या यह संकट किसी बड़े सिस्टमिक बदलाव का संकेत है।

लाल किले के सन्नाटे को चीरती साजिश की परतें, NIA हिरासत बढ़ने के बाद खुलासों की नई कड़ियाँ

(जीएनएस)। नई दिल्ली। सर्द दिसंबर की सुबह में दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट का माहौल असाधारण तनाव से भरा था। अदालत परिसर के बाहर सुरक्षा के कड़े इंतज़ाम थे, मानो हर कदम पर किसी अनदेखे खतरे की परछाईं मंडरा रही हो। इसी माहौल के बीच लाल किला ब्लास्ट मामले के मुख्य आरोपित शोएब अली को एक बार फिर अदालत में पेश किया गया, जहां से राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की मांग पर उसकी हिरासत 10 दिनों के लिए और बढ़ा दी गई।

शुक्रवार को उसकी पिछली हिरासत का आखिरी दिन था और जैसे ही उसे पेशी कक्ष में लाया गया, उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं था—ना डर, ना बेचैनी, जैसे वह पहले से तय किए गए रास्ते पर बेफिक्री से चल रहा हो।

एनआईए ने अदालत को बताया कि शोएब अली की भूमिका अभी भी कई परतों में छुपी हुई है। उससे लगातार पूछताछ के दौरान कुछ संकेत मिले हैं, लेकिन पूरी कहानी अभी

सामने नहीं आई। जांच एजेंसी को शक है कि शोएब केवल एक मोहरा नहीं, बल्कि इस पूरी आतंकवादी साजिश का एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसकी जानकारी से इस नेटवर्क का असली चेहरा सामने आ सकता है। अदालत ने तर्कों को सुनने के बाद कहा कि मामले की गंभीरता को देखते हुए एजेंसी को अब भी समय चाहिए, इसलिए हिरासत बढ़ाई जाती है। इस मामले में अब तक सात आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है। हर गिरफ्तारी के साथ ब्लास्ट की परछाइयों के पीछे छुपे दिमागों का जाल और उलझता जा रहा है। लाल किले के पास 10 नवंबर 2024 की वह शाम आज भी लोगों की यादों में ताजा है। दिल्ली की सबसे व्यस्त सड़कों में से एक पर अचानक धमाके की आवाज़ गूंजी, आसमान धुएँ से भर गया, और कुछ ही सेकंड में रोशनी, चीखों और अराजकता का ऐसा संगम बना, जिसने देश को झकझोर दिया। आई-10 कार में हुए विस्फोट ने 13 लोगों की जान ले ली थी और 32 लोग घायल हुए थे। बाद में पता चला कि यह कार आमिर रशीद अली के नाम पर रजिस्टर्ड थी, जो अब एजेंसी की पूछताछ का एक और बड़ा सिरा बन चुकी है। लेकिन शोएब अली सिर्फ इस कहानी की एक परत है। असली मोड़ तब आया जब एनआईए ने श्रीनगर से जसीर बिलाल वानी उर्फ दानिश को गिरफ्तार किया—एक ऐसा युवक, जो राजनीति विज्ञान का स्नातक था और जिसकी जिंदगी सामान्य राहों पर चल सकती थी, अगर उसका सामना डॉ. उमर नबी से न हुआ होता। अदालत ने उसे पहले ही 10 दिनों की हिरासत में भेज दिया था।

एनआईए ने बताया कि दानिश ने सिर्फ तकनीकी सहायता नहीं दी, बल्कि साजिश की रीढ़ विकसित करने में भूमिका निभाई। उसने ड्रोन में तकनीकी बदलाव किए, रॉकेट तैयार करने की कोशिश की और कार बम बनाने की प्रक्रिया में भी साथ रहा। उसके मोबाइल से मिले डिजिटल रिकॉर्ड, नक्शे और चैट्स ने जांच को एक नई दिशा दी है।

सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि दानिश को अक्टूबर 2024 में कुलगाम की एक मस्जिद में डॉक्टर मॉड्यूल से मिलवाया गया था। वहीं उसके दिमाग में उग्रपंथ का ज़हर भरा गया और उसे "मिशन" के लिए तैयार किया गया। इसके बाद उसे हरियाणा के फरीदाबाद में स्थित अल-फलाह विश्वविद्यालय भेजा गया, जहां वह बिना किसी शक के, सामान्य छात्र की तरह रहकर इस साजिश की तैयारी करता रहा।

तेजस निर्माण में नई रफ्तार: एलसीए-1ए को मिला पांचवां इंजन, साल के अंत तक 12 इंजन मिलने की उम्मीद

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारतीय वायुसेना के लिए स्वदेशी लड़ाकू क्षमता को नई गति देने वाला एक महत्वपूर्ण विकास सामने आया है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) को अमेरिकी कंपनी जीई एयरोस्पेस से जीई-404 इंजन की पाँचवीं खेप प्राप्त हो चुकी है, जिससे एलसीए तेजस मार्क-1ए के उत्पादन की रफ्तार बढ़ने की उम्मीद तेज हो गई है। लंबे समय से इंजन की आपूर्ति में आ रही देरी के चलते निर्माण समय-सीमा प्रभावित हो रही थी, लेकिन अब लगातार इंजन मिलते जाने से उत्पादन का ठहरा हुआ पहिया फिर से सुचारू रूप से घूमने लगा है। एचएएल और वायुसेना सूत्रों के अनुसार, वर्ष के अंत तक कुल 12 इंजन भारत पहुंच जाएंगे, जो तेजी से बढ़ते उत्पादन लक्ष्य को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। यह उल्लेखनीय है कि एचएएल को मार्च से ही तेजस के नए संस्करण मार्क-1ए की आपूर्ति शुरू कर देनी थी, लेकिन अमेरिका में जीई-404 इंजन के उत्पादन संबंधी बाधाओं के कारण कार्यक्रम कई महीनों पीछे चला गया। अब मौलिक समस्याओं के समाधान और उत्पादन लाइनों के पुनर्गठन के

बाद, इंजन आपूर्ति की गति सुधरने लगी है। एचएएल को इस वर्ष 26 मार्च को पहला इंजन मिला था, जिसके बाद क्रमशः जुलाई, सितंबर और अक्टूबर में चार और इंजन पहुंचे। आज प्राप्त हुआ पाँचवाँ इंजन इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि भारतीय वायुसेना के लिए तेजस के बड़े ऑर्डर को पूरा करने के लिए एक स्थिर और समयबद्ध इंजन सप्लाई चेन अनिवार्य है।

भारत सरकार ने फरवरी 2021 में 83 तेजस मार्क-1ए लड़ाकू विमानों के लिए लगभग 48,000 करोड़ रुपये का अनुबंध किया था, जिसमें 73 सिंगल-सीट लड़ाकू और 10 ट्विन-सीट ट्रेनर विमान शामिल हैं। यह डिलीवरी मूल रूप से 2024 से शुरू होनी थी, मगर इंजन उपलब्धता में देरी ने पूरे कार्यक्रम को पीछे धकेल दिया। इसी दौरान, भारतीय वायुसेना ने अपनी भविष्य की जरूरतों को देखते हुए 25 सितंबर 2025 को 97 अतिरिक्त तेजस मार्क-1ए विमानों का एक और बड़ा अनुबंध कर दिया, जिसमें 68 सिंगल-सीट और 29 ट्विन-सीट ट्रेनर शामिल हैं। इन विमानों की डिलीवरी 2027-28 से शुरू होने और अगले छह वर्षों में पूरी होने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार एचएएल के पास अब कुल 180 तेजस मार्क-1ए विमानों का विशाल लक्ष्य है, जिसके लिए इंजन आपूर्ति सबसे महत्वपूर्ण कारक बन जाता है।

एचएएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. डीके सुनील ने इस अवसर पर बताया कि कंपनी न केवल मौजूदा एफ-404 इंजन श्रृंखला प्राप्त कर रही है, बल्कि भविष्य के तेजस मार्क-2 और भारत के महत्वाकांक्षी एएमसीए कार्यक्रम के लिए जीई के एफ-414 इंजनों के 80 प्रतिशत तकनीकी हस्तांतरण पर भी गंभीर बातचीत चल रही है। उनका कहना है कि इस वित्तीय वर्ष में कुल 10 इंजन मिलने की संभावना है और शेष मार्च तक पहुंच जाएंगे। उन्होंने यह भी पुष्टि की कि तेजस के पहले दस विमानों का ढांचा पूरी तरह तैयार हो चुका है और ग्यारहवाँ विमान निर्माणाधीन है, जिससे यह संकेत मिलता है कि इंजन मिलते ही विमान भी तेज़ी से असेंबल हो सकेंगे।

इसी बीच, यह भी जानकारी सामने आई है कि जीई अगले वर्ष भारत को 20 और इंजन देने का वादा कर चुका है। इस संबंध में उच्चस्तरीय वार्ताएँ लगातार चल रही हैं और दोनों देशों की तकनीकी टीमें आपूर्ति की प्रक्रिया को निर्बाध बनाने में जुटी हैं। रक्षा विश्लेषकों का मानना है कि यदि इंजन सप्लाई में यह निरंतरता बनी रहती है, तो भारतीय वायुसेना को आधुनिक, स्वदेशी और विश्वसनीय लड़ाकू विमान प्रणाली मिलने का रास्ता पूरी तरह साफ हो जाएगा। यह भी माना जा रहा है कि तेजस कार्यक्रम की तेजी भारत को न केवल आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन क्षमता की ओर बढ़ाएगी, बल्कि आने वाले वर्षों में वैश्विक एयरोस्पेस बाजार में एक मजबूत प्रतिस्पर्धी भी बनाएगी।

आदिनाथ मंदिर ढहाकर बनी आदिना मस्जिद? राज्यसभा में गरमा गया ऐतिहासिक विवाद

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की प्राचीन आदिना मस्जिद को लेकर पुराना विवाद एक बार फिर राजनीतिक और सामाजिक बहस के केंद्र में आ गया है। शुक्रवार को राज्यसभा में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और सदन के सदस्य शामिक भट्टाचार्य ने यह मुद्दा उठाते हुए कहा कि मालदा जिले में स्थित प्रसिद्ध आदिना मस्जिद का निर्माण वास्तव में एक प्राचीन आदिनाथ मंदिर को ध्वस्त करके किया गया था। उन्होंने दावा किया कि मस्जिद के परिसर में आज भी मंदिर से जुड़े कई अवशेष मौजूद हैं, जो इस बात के साक्ष्य हैं कि यह स्थल मूल रूप से हिंदू मंदिर था।

शून्यकाल के दौरान बोलते हुए भट्टाचार्य का कहना था कि आदिना मस्जिद परिसर में कमल, देवी–देवताओं के चिह्न, और यहां तक कि गणेश जी की मूर्ति स्पष्ट दिखाई देती है, जो इस बात का संकेत है कि मंदिर को तोड़कर मस्जिद का निर्माण कराया गया। उन्होंने सदन से आग्रह किया कि इस ऐतिहासिक स्थल का सत्य सामने लाना देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक अध्ययन के लिए आवश्यक है। भाजपा सांसद ने यह भी कहा कि मस्जिद परिसर को लेकर कई स्थानीय समुदाय, खासकर जनजातीय समूह, लंबे समय से मांग कर रहे हैं कि स्थल के मूल स्वरूप को बहाल किया जाए, क्योंकि उनसे जुड़ी प्राचीन पहचान का एक बड़ा हिस्सा इस परिसर से जुड़ा हुआ है।

भट्टाचार्य ने इस बहस को और भी तीखा करते हुए मुर्शिदाबाद की राजनीति का उदाहरण दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस विधायक हुमायूं कबीर द्वारा हाल ही में कथित "बाबरी मस्जिद" की आधारशिला रखने के दावे से राज्य में तनाव भड़काने की कोशिश की गई है। भाजपा सांसद ने यह मामला उठाते हुए कहा कि उनकी पार्टी यह मुद्दा किसी प्रकार का सांप्रदायिक तनाव पैदा करने के लिए नहीं बल्कि इतिहास के वास्तविक स्वरूप को सामने रखने के लिए उठा रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में यह एक व्यापक धारणा बनती जा रही है कि ऐतिहासिक स्मारकों की व्याख्या को राजनीतिक उद्देश्यों के लिए बदला जा रहा है।

इतिहासकारों के अनुसार, 1369 ईस्वी में सुल्तान सिकंदर शाह ने बंगाल सल्तनत के शासनकाल में भव्य आदिना मस्जिद का निर्माण कराया था, जो भारत के मध्यकालीन इस्लामी स्थापत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है। इसका स्थापत्य अपनी विशालता, मेहराबदार दीर्घाओं और मध्य एशियाई प्रभावों के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने इसे राष्ट्रीय महत्व का संरक्षित स्मारक घोषित किया है और यह स्थल आज भी देश–विदेश से आने वाले शोधकर्ताओं और पर्यटकों को आकर्षित करता है।

विवाद हालांकि नया नहीं है। वर्षों से इस परिसर में दिखाई देने वाले प्रतीकों को लेकर अलग-अलग समुदायों और राजनीतिक दलों के अपने-अपने तर्क रहे हैं। भाजपा का कहना है कि जिन अवशेषों का उल्लेख किया जा रहा है, वे केवल कहानी नहीं बल्कि स्थिर भौतिक प्रमाण हैं, जिनका वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। दूसरी ओर, विपक्षी दल इसे राजनीतिक ध्रुवीकरण से जोड़कर देख रहे हैं और इसे अस्थिरता पैदा करने का प्रयास बता रहे हैं। स्थानीय लोग भी इस बहस में सक्रियता से शामिल हो चुके हैं और कुछ समूहों की मांग है कि एएसआई इस परिसर का विस्तृत और पारदर्शी सर्वे करा कर सभी संदेहों को दूर करे।

श्रीनगर की तंग गलियों में खामोशी तोड़ती एसआईए की दबिश, बटमालू के घर से उठी जांच की नई परतें

(जीएनएस)। श्रीनगर। दिसंबर की ठंडी सुबह में बटमालू की दियारवानी बस्ती हमेशा की तरह धुंध और रुटीन हलचल से भरी हुई थी। लेकिन शुक्रवार को माहौल अचानक बदल गया, जब राज्य जांच एजेंसी (एसआईए) की गाड़ियों का काफिला बिना किसी शोर-शराबे के इस तंग इलाके में दाखिल हुआ। कुछ ही मिनटों में गली के दोनों सिरों पर सुरक्षा घेरा कस दिया गया और अधिकारियों की एक टीम सीधे उस घर की ओर बढ़ी, जो अब लाल किला ब्लास्ट केस की जांच में एक नया केंद्र बन चुका है।

यह घर था तुफैल नियाज़ भट के बेटे का—एक साधारण-सा घर, जहां रहने वाला युवक एसी बनाने और ठीक करने का काम करता था। एक ऐसा इंसान जिसकी पहचान एक मेहनती टेक्नीशियन के रूप में थी, लेकिन राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों की नज़र में वह अब सिर्फ एक मिस्त्री नहीं, बल्कि एक ऐसे नेटवर्क का हिस्सा हो सकता है जो दिल्ली की ऐतिहासिक दीवारों तक मौत का साया ले आया।

तुफैल नियाज़ भट के बेटे को पहले ही हिरासत में लिया जा चुका है। आरोप है कि उसने लाल किला ब्लास्ट के मास्टरमाइंड आत्मघाती हमलावर डॉ. उमर फारूक के नेटवर्क को राइफल उपलब्ध कराने में भूमिका निभाई। यह दावा अभी जांच के दायरे में है, लेकिन एसआईए ने उसकी गिरफ्तारी के बाद कई ऐसी बातें पाईं, जिनसे पता चलता है कि वह सिर्फ तकनीकी मजदूर नहीं था, बल्कि एक बड़े मॉड्यूल की कड़ी हो सकता है।

शुक्रवार की छापेमारी उसी फॉलो-अप जांच का हिस्सा थी। टीम ने घर के हर कोने की तलाशी ली—अलमारियों, स्टोर, पुराने औजारों के बक्से, इलेक्ट्रॉनिक पार्ट्स की ढेरों में छुपी संभावित सुरागों की तलाश की। अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि क्या यहाँ ऐसे कोई दस्तावेज़, इलेक्ट्रॉनिक सबूत, हथियारों के पुर्जे या संपर्कों की सूची मौजूद है, जो यह साबित करे कि वह आतंकवादी मॉड्यूल के संपर्क में था।

एसआईए इस पूरे मामले को अत्यंत गंभीरता से देख रही है क्योंकि लाल किला ब्लास्ट ने अब तक के कई अनदेखे चैनलों का खुलासा किया है—ऐसे चैनल जहाँ आम पेशे से जुड़े लोग आतंक की सप्लाई चेन में शामिल हो रहे हैं। हथियार सप्लाई लिंक और आत्मघाती हमलावर उमर फारूक के साथ संभावित रिश्तों की पड़ताल तेजी से विस्तृत हो रही है।

छापेमारी के दौरान क्षेत्र में तनाव महसूस किया जा सकता था। बटमालू की संकरी गली में खड़े लोग खिड़कियों और दरवाजों से झांककर देखते रहे कि उनके बीच से गुजरने वाला वह साधारण युवक आखिर इतनी बड़ी जांच में कैसे फंस गया। लेकिन एजेंसियों को पूरा भरोसा है कि हर छोटे घर, हर औजार और हर संपर्क के विवरण से उस बड़े नेटवर्क का नक्शा तैयार होगा, जिसे अब तोड़ना जरूरी है।

इस कार्रवाई के साथ स्पष्ट संकेत दे दिया गया है कि जांच की दिशा अब और गहरी होगी और सुरक्षा एजेंसियाँ किसी भी छोटी जानकारी को नजरअंदाज नहीं करेंगी। यह छापेमारी सिर्फ एक घर की तलाशी नहीं थी, बल्कि यह संदेश था कि कोई भी सुराग, चाहे जितना छोटा क्यों न हो, देश की सुरक्षा के विरुद्ध बिछाई गई साजिश का हिस्सा बनने से नहीं बच पाएगा।

गरवी गुजरात हिन्दी

JioTV CHENNAL NO. 2002

Jio Air Fiber · Jio Tv + · Jio Fiber · Daily Hunt · ebaba Tv · Dish Plus

DTH live OTT · Rock TV · Airtel · Amezone Fire · Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

पंजाब का जल संकट

निस्संदेह, पंजाब इन दिनों दोहरे जल संकट से जूझ रहा है। एक ओर जहां अंधाधुंध भू-गर्भीय जल के दोहन से उसका जलस्तर गिर रहा है, वहीं कीटनाशकों व रासायनिक खादों के बेतहाशा इस्तेमाल से पानी जहरीला होता जा रहा है। हाल ही में केंद्रीय भूजल बोर्ड यानी सीजीडब्ल्यूबी के नवीनतम आंकड़े चिंता बढ़ाने वाले हैं। संस्था के नवीनतम निष्कर्ष बताते हैं कि पंजाब 156.36 फीसदी भूजल दोहन के साथ इसके अत्यधिक इस्तेमाल में देशभर में अग्रणी है। जो इस बात को रेखांकित करता है कि पंजाब में इसके जलस्रोतों का कितने खतरनाक ढंग से अत्यधिक दोहन किया जा चुका है। लेकिन यह संकट यहीं समाप्त नहीं हो जाता। इस संकट से जुड़ी त्रासदी यह भी है कि सीजीडब्ल्यूबी की नवीनतम वार्षिक भूजल गुणवत्ता रिपोर्ट-2025 बताती है कि पंजाब में परीक्षण किए गए भूजल के 62.5 फीसदी नमूनों में यूरेनियम सुरक्षित सीमा से कहीं अधिक मात्रा में पाया गया है। निश्चित रूप से भू-गर्भीय जल के अत्यधिक दोहन और पानी की गुणवत्ता में गिरावट में गहरा संबंध है। दरअसल, अत्यधिक भूजल दोहन से पानी का स्तर नीचे चला जाता है, जिसके चलते गहरे बोरवेल लगाने पड़ते हैं। जो भूगर्भीय रूप से अस्थिर, खनिज-समृद्ध परतों से पानी खींचते हैं। जो अक्सर यूरेनियम, आर्सेनिक, नाइट्रेट या लवणता से भरी होती हैं। इसके साथ ही, दशकों से चली आ रही सघन कृषि, अधिक सिंचाई वाली फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिये भारी मात्रा में सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों की जरूरत होती है। जिसके चलते भूजल व मिट्टी दोनों ही में प्रदूषकों का रिसाव तेज हो जाता है। इस भयावह संकट को पिछले दिनों राज्यसभा में राजनीतिक आवाज तब मिली, जब सांसद राघव चड्ढा ने पंजाब में विषाक्त जल संकट पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने चेताया था कि भारी धातुओं और रेडियोधर्मी प्रदूषकों वाला पानी आम लोगों के स्वास्थ्य पर घातक असर डाल रहा है। ऐसा करके उन्होंने देश के नीति नियंताओं को आईना दिखाने का प्रयास ही किया है।

दरअसल, आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा ने राज्यसभा में इस चिंता को अभिव्यक्त करके, पर्यावरणीय आंकड़ों के जरिये लंबे समय से दिए जा रहे संकेतों को स्पष्ट रूप से उजागर ही किया है। हमें इस बात का अहसास होना चाहिए कि यह अब कोई दूरगामी पर्यावरणीय चिंता नहीं बल्कि हमारे सामने एक उभरती हुई जन-स्वास्थ्य की आपात स्थिति ही है। देश में अकसर उस ट्रेन का जिक्र किया जाता रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में पंजाब के लोग कैंसर के उपचार के लिये राजस्थान के विभिन्न अस्पतालों में जाया करते हैं। जिसे अकसर कैंसर ट्रेन के नाम से पुकारा भी जाता रहा है। निस्संदेह, राज्य के कुओं, बोरवेल या हैंडपंप पर निर्भर लाखों पंजाबियों के लिये, इसका मतलब है कि उनके लिये रोजाना पीने का पानी ही स्वास्थ्य खतरा बन सकता है। जिसके उपयोग से उनके गुर्दे की क्षति, कैंसरकारी घातक प्रभाव और प्रजनन व शारीरिक विकास संबंधी नुकसान हो सकता है। निस्संदेह, इस दिशा में तत्काल निर्णायक कार्रवाई करने की सख्त आवश्यकता है। समय की मांग है कि तत्काल प्रभाव से भूजल के अंधाधुंध दोहन पर सख्त अंकुश लगाया जाए। इसके लिये बेहद जरूरी है कि कृषि क्षेत्र पर ध्यान देकर, कम पानी का उपयोग करने वाली फसलों को प्राथमिकता के आधार पर प्रोत्साहित किया जाए। राज्य के हर शहर व गांव में भूजल गुणवत्ता परीक्षण की सुविधा सहज रूप से उपलब्ध करायी जाए। प्रदूषित पेयजल के प्रभावी उपचार के साथ ही सुरक्षित जल आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। इसके साथ ही औद्योगिक व कृषि प्रदूषकों पर नियंत्रण के लिये पारदर्शी व सख्त कानून व्यवस्था का अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वच्छ पेयजल अनंत मात्रा में उपलब्ध नहीं है। हम इसे असीमित संसाधन के बजाय एक नाजुक जीवन रेखा के रूप में देखें। यदि आज हमने समय रहते हुए पेयजल को सुरक्षित व संरक्षित नहीं किया तो आने वाली पीढ़ियां पेयजल संकट से जूझने को अभिशप्त होंगी। इतना ही नहीं, उन्हें सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट भी विरासत के रूप में मिलेगा। जिसके लिये वे हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

समुद्री पानी के गर्म होने से बढ़ता चक्रवाती कहर

> “जलवायु बदलावों के चलते चक्रवाती तूफानों की संख्या में वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों के अनुसार, हिंद महासागर के गर्म होने के कारण चक्रवातों की गति व मजबूती बढ़ी है। यह बात नासा के अध्ययन में भी सामने आयी। यदि संसाधनों के अंधाधुंध दोहन पर काबू नहीं किया तो साइक्लोन तटीय शहरों में तबाही लाते रहेंगे।

सत्ताईस नवंबर तक भारत के दक्षिणी राज्यों में सेनयार चक्रवात ने भारी तबाही मचाई थी और अगले दिन दितवाह ने अपना कहर शुरू कर दिया। तमिलनाडु में तीन लोगों की मौत, 57 हजार हेक्टेयर फसल नष्ट होना और अनगिनत घरों का उजड़ना इसके परिणाम रहे। आंध्र प्रदेश, पुडुचेरी और तमिलनाडु में जलभराव ने जनजीवन को अस्त-व्यस्त किया। सबसे बड़ी मार किसानों पर पड़ी है, क्योंकि उत्तर-पूर्वी मानसून के कारण धान, गन्ना और अन्य फसलें कटाई के करीब थीं, जिन्हें भारी बारिश ने गिरा दिया। यदि 48 घंटे में धान न कटे तो वे सड़ जाएंगे, और खेतों में पानी भरने के कारण यह कार्य संभव नहीं है। दुनिया में तेजी से आ रहे प्राकृतिक बदलावों ने ऐसे तूफानों की संख्या में वृद्धि की है। यदि मानव ने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ को नियंत्रित नहीं किया तो साइक्लोन या बवंडर के चलते भारत के सागर किनारे वाले शहरों में लोगों का जीना दूभर हो जाएगा। वैज्ञानिकों के अनुसार, पिछले 30 वर्षों के दौरान तूफानों की तीव्रता में बढ़ोतरी देखी गई है। हिंद महासागर के गर्म होने के कारण चक्रवातों की गति व मजबूती बढ़ी है। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, पिछले पांच सालों (करीब 2018-2022) में तूफानों की घटनाओं में 32 प्रतिशत इजाफा हुआ। पिछले तीन माह में यह चौथा विकराल चक्रवात है। यही नहीं, मई से जुलाई तक कई कम क्षमता के चक्रवातों ने पश्चिम बंगाल, कोंकण, गुजरात आदि में कोहराम मचाया था।

इस तरह के बवंडर तात्कालिक नुकसान ही नहीं पहुंचाते, बल्कि इनका दीर्घकालिक प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है। इसके साथ ही, समूची प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है। वनों या पेड़ों को संपूर्ण स्वरूप पाने में दशकों लगे, वे पलक झपकते नेस्तनाबूद हो जाते हैं। तेज हवा के कारण तटीय क्षेत्रों में मीठे पानी में खारा पानी मिलने और खेती वाली जमीन पर मिट्टी व दलदल बनने से हुई क्षति पूरा करना मुश्किल होता है।

वर्ष 2019 में जारी आईपीसीसी की रिपोर्ट 'ओशन एंड क्रायोस्फीयर इन ए चेंजिंग क्लाइमेट' के अनुसार, सारी दुनिया के महासागर 1970 से ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन से उत्पन्न 90 फीसदी अतिरिक्त गर्मी को अवशोषित कर चुके हैं। इसके कारण महासागर गर्म हो रहे हैं और इसी से चक्रवात का शीघ्र और भयंकर चेहरा सामने आ रहा है। निवार तूफान के पहले बंगाल की खाड़ी में जलवायु परिवर्तन के चलते समुद्र का जल सामान्य से अधिक गर्म हो गया था। उस समय समुद्र की सतह का तापमान औसत से लगभग 0.5-1 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म था, कुछ क्षेत्रों में यह सामान्य से लगभग 1.2 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया था। बता दें कि समुद्र का 0.1 डिग्री तापमान बढ़ने का अर्थ है चक्रवात को अतिरिक्त ऊर्जा मिलना। हवा की विशाल मात्रा के तेजी से गोल-गोल घूमने पर उत्पन्न तूफान उष्णकटिबंधीय चक्रीय बवंडर कहलाता है। पृथ्वी भौगोलिक रूप से दो गोलार्धों में विभाजित है। ठंडे या बर्फ वाले उत्तरी गोलार्ध में उत्पन्न इस तरह के तूफानों को हरिकेन या टाइफून कहते हैं। इनमें हवा का घूर्णन घड़ी की सुइयों के विपरीत दिशा में एक वृत्ताकार रूप में होता है। जब बहुत तेज हवाओं वाले उग्र आंधी तूफान अपने साथ मूसलधार वर्षा लाते हैं तो उन्हें हरिकेन कहते हैं। जबकि भारत के हिस्से दक्षिणी अर्धगोलार्ध में इन्हें चक्रवात या साइक्लोन कहा जाता है। इस तरफ हवा का घुमाव घड़ी की सुइयों की दिशा में वृत्ताकार होता है। किसी भी उष्णकटिबंधीय अंधड़ को चक्रवाती तूफान की श्रेणी में तब गिना जाने लगता है जब उसकी गति कम से कम 74 मील प्रति घंटे हो जाती है। ये बवंडर कई परमाणु बमों के बराबर ऊर्जा पैदा करने की क्षमता वाले होते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में बार-बार और हर बार पहले से घातक तूफान आने का वास्तविक कारण मानव द्वारा किए जा रहे प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से उपजी पर्यावरणीय त्रासदी 'जलवायु परिवर्तन' भी है। इस साल के प्रारंभ में ही अमेरिका की अंतरिक्ष शोध संस्था नासा ने चेता दिया था कि जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रकोप से चक्रवाती तूफान और तीव्र होते जाएंगे। जलवायु परिवर्तन के कारण उष्णकटिबंधीय महासागरों का तापमान बढ़ने से सदी के अंत में बारिश के साथ भयंकर बारिश और तूफान आने की दर बढ़ सकती है। यह बात नासा के एक अध्ययन में सामने आई है। अमेरिका में नासा के जेट प्रोपल्शन लेबोरेटरी यानी जेपीएल के नेतृत्व में यह अध्ययन किया गया। इसमें औसत समुद्री सतह के तापमान और गंभीर तूफानों की शुरुआत के बीच संबंधों को निर्धारित करने के लिए उष्णकटिबंधीय महासागरों के ऊपर नासा के वायुमंडलीय इन्फ्रारेड साउंडर (एआईआरएस) उपकरणों द्वारा 15 सालों तक एकत्र आंकड़ों के आकलन से यह बात सामने आई।

अध्ययन में पाया गया कि समुद्र की सतह का तापमान लगभग 28 डिग्री सेल्सियस से अधिक होने पर गंभीर तूफान आते हैं। 'जियोफिजिकल रिसर्च लेटर्स' (फरवरी, 2019) में प्रकाशित अध्ययन में, समुद्र की सतह के तापमान में वृद्धि के कारण हर एक डिग्री सेल्सियस पर 21 प्रतिशत अधिक तूफान आते हैं। 'जेपीएल' के साइंटिस्ट हार्टमुट औमन के मुताबिक गर्म वातावरण में गंभीर तूफान बढ़ जाते हैं। भारी बारिश के साथ तूफान आमतौर पर साल के सबसे गर्म मौसम में ही आते हैं। लेकिन जिस तरह इस साल बरसात और सर्दियों में भारत में ऐसे तूफान के हमले बढ़े हैं, यह हमारे लिए गंभीर चेतावनी है।

प्रेरणा

जब 'नहीं' ने एक नया ब्रह्मांड खोला: ब्रायन एक्टन की वह कहानी जो अस्वीकृति को अवसर में बदल देती है

जीवन में कुछ घटनाएँ इतनी साधारण दिखाई देती हैं कि हम उन्हें बस एक दिन की निराशा मानकर छोड़ देते हैं, लेकिन बाद में वही घटनाएँ एक विशाल बदलाव की नींव बनती हैं। अस्वीकृति भी ऐसी ही एक घटना है—दर्द देती जरूर है, लेकिन कभी-कभी उसी दर्द से नई ताकत, नई दिशा और नया सपना जन्म लेता है। ब्रायन एक्टन की कहानी ऐसी ही एक कहानी है, जहाँ "नहीं" एक ऐसा मोड़ बन गया जिसने पूरी दुनिया के संवाद करने का तरीका बदल दिया।

सन 2009 का साल था। ब्रायन एक्टन एक अनुभवी सॉफ्टवेयर इंजीनियर थे, कई वर्षों का शानदार करियर और बड़ी कंपनियों में काम करने का अनुभव। लेकिन उस वर्ष उनके सामने दो ठोकरें लगातार आईं—पहले फेसबुक ने उनका जॉब आवेदन ठुकराया और फिर ट्विटर ने भी। एक ही समय में दो प्रतिष्ठित कंपनियों से "आपकी आवश्यकता नहीं" सुनना किसी भी इंसान को भीतर तक हिला सकता है। लेकिन ब्रायन ने इस अस्वीकृति को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने ट्विटर पर लिखा—"फेसबुक ने मुझे अस्वीकार कर दिया यह दुखद है, लेकिन लगता है कुछ और अच्छा मेरा इंतज़ार कर रहा है।"

यह एक साधारण वाक्य नहीं था; यह एक ऐसे व्यक्ति की सोच थी जो अस्वीकृति को दीवार नहीं, सीढ़ी मानता था। दुनिया में हर किसी के लिए एक रास्ता होता है, लेकिन कई बार वह रास्ता तब तक दिखाई नहीं देता जब तक कोई पुराना रास्ता बंद न हो जाए। ब्रायन के लिए भी यही हुआ। नौकरी न मिलने का दुःख तो ज़रूर था, लेकिन इसी दुःख ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर किया कि क्यों न कुछ ऐसा बनाया जाए जो अलग हो, सरल हो, और हर व्यक्ति तक पहुँचे। उन्होंने अपने दोस्त जेन कौम के साथ मिलकर एक नई शुरुआत की। सीमित संसाधनों, छोटे से कमरे और अनगिनत असमंजसों के बीच उन्होंने एक ऐसी सोच को जन्म दिया जो आगे चलकर पूरी दुनिया में क्रांति लाने वाली थी—एक ऐसा मैसेजिंग ऐप जिसमें न विज्ञापन हों, न जटिल फीचर, न अव्यवस्था। बस सरलता, सुरक्षा और भरोसा। इस सोच का नाम था—व्हाट्सएप।

धीरे-धीरे, यह छोटा-सा ऐप दुनिया की सबसे बड़ी जनसंख्या की पसंद बन गया। लाखों लोग जुड़ते गए, फिर करोड़ों, और देखते ही देखते व्हाट्सएप हर घर की रोज़मर्रा की जरूरत बन गया। कोई जन्मदिन की शुभकामना भेजता, कोई घर का पता, कोई प्यार का संदेश, कोई ज़रूरी जानकारी—हर छोटी-बड़ी बात का रास्ता व्हाट्सएप से होकर गुजरने लगा। यह सिर्फ एक ऐप नहीं था; यह संवाद का नया युग था।

फिर जीवन ने वह पल भी लौटाया, जिसकी गूंज इतिहास में हमेशा सुनाई देगी। 2014 में फेसबुक—वही कंपनी जिसने ब्रायन को ठुकराया था—व्हाट्सएप को खरीदने के लिए उनके पास आई। प्रस्ताव कोई छोटा-मोटा नहीं था। 19 अरब डॉलर—तकनीकी इतिहास की सबसे बड़ी डीलों में से एक। यह सिर्फ एक सौदा नहीं था; यह उस व्यक्ति की जीत का प्रतीक था जिसे कभी कहा गया था कि "आप हमारे लिए उपयुक्त नहीं हैं।"

यह कहानी सिर्फ तकनीक की नहीं, इंसान की गहराई की कहानी है। यह बताती है कि अस्वीकृति हमें तोड़ती नहीं, यदि हम उसे अपनी ताकत बना लें। दुनिया की हर असफलता, हर बंद दरवाज़ा, हर नाकामी एक संकेत होती है कि रास्ता बदलो, सोच बदलो, खुद को बदलो—क्योंकि मंज़िल शायद किसी और दिशा में है।

ब्रायन एक्टन का सफर हमें यह एहसास दिलाता है कि जीवन में हर "नहीं" के भीतर कहीं एक "हाँ" छुपी होती है।

बस हमें इतना कर लेना है कि उस "नहीं" से टूटना नहीं है, बल्कि उस "हाँ" को खोजने के लिए आगे बढ़ जाना है।

कभी-कभी अस्वीकृति हमें नीचे धकेलने नहीं आती; वह हमें उड़ान भरने के लिए तैयार करती है।

लेनदेन की भेंट चढ़ा एक पवित्र रिश्ता, बढ़ती ही जा रही दहेज की मांग

दहेज को लेकर बीते दिनों एक ही दिन दो खबरें छपीं। पहली खबर में उच्चतम न्यायालय ने एक मामले की सुनवाई में कहा कि विवाह एक पवित्र बंधन है। यह आपसी विश्वास और परस्पर सम्मान पर टिका है, किंतु दुख की बात यह है कि दहेज की बुराई की वजह से यह पवित्र रिश्ता व्यावसायिक लेनदेन बनकर रह गया है। दूसरी खबर उम्मीद जगाने वाली थी।

इस खबर के अनुसार एक लड़के ने शादी में मिले 31 लाख रुपये यह कहते हुए लौटा दिए कि वह लड़की के पिता की मेहनत की कमाई को नहीं ले सकता। ऐसी खबरें उम्मीद भी जगाती हैं।

हो सकता है कि एक दिन ऐसा आए जब दहेज बीती बात हो जाए, लेकिन फिलहाल ऐसा होता नहीं दिखता, क्योंकि उच्चतम न्यायालय ने अपने समक्ष पेश मामले में यह भी कहा कि दहेज की बुराई को अक्सर उपहार या मर्जी से दिए गए चढ़ावे के रूप में छिपाने की कोशिश की जाती है, लेकिन असल में वह सामाजिक रुतबा दिखाने और पैसे के लालच को पूरा करने का जरिया बन गया है। न्यायालय ने यह टिप्पणी एक ऐसे व्यक्ति की जमानत याचिका रद करते हुए की, जिस पर आरोप था कि उसने पत्नी को शादी के चार महीने बाद दहेज के लिए जहर दे दिया। शीर्ष न्यायालय ने यह माना कि दहेज एक बहुत गंभीर अपराध है और इसके कारण महिलाओं पर अन्याय हो रहा है। दहेज की मांगों के कारण क्रूरता भी बढ़ती जाती है। एक महिला की कोई गलती नहीं होती, लेकिन दूसरों के लालच के कारण उसकी जान चली जाती है।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी पढ़कर करीब चार दशक पहले दूरदर्शन पर प्रसारित एक कार्यक्रम याद आ गया। उसमें एक अस्पताल के बर्न वार्ड से एक ऐसी महिला का इंटरव्यू दिखाया गया था, जिसे उसके पति ने जला दिया था। जब दूरदर्शन के लिए यह कार्यक्रम बनाने वाले लोग इस स्त्री के पति के पास पहुंचे थे तो वह पूरी बातचीत में मुस्कुराता रहा था, जैसे उसने कोई बहुत बड़ा काम किया हो। उसी दौरान एक महिला की बेटी को दहेज के लिए जलाकर मार दिया गया था। यह वृद्ध महिला उन दिनों स्त्री संगठनों द्वारा आयोजित हर धरने-प्रदर्शन में आती थी और अपनी बेटी के साथ हुए अन्याय को बताती थी। बाद में उन्होंने शक्तिशालिनी नाम से एक संगठन भी बनाया।

कुछ समय पहले प्रायः अखबारों में ऐसी खबरें आती थीं कि स्टोव फटने के कारण बहू की जलने से मौत हो गई। बहुत बार तो घरों में रसोई गैस होने के बावजूद बहू को न जाने क्यों स्टोव पर खाना बनाना पड़ता था? सच यही है कि कोई स्टोव फटता नहीं था, बल्कि बहू पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी जाती और उसे दुर्घटना का रूप दे दिया जाता था। यह स्थिति संपन्न कहे जाने वाले घरों तक में थी।

यही कारण है कि देश में दहेज संबंधी धारा 498 ए काफी कठोर है। यदि किसी महिला की शादी के सात वर्ष के अंदर जलने या किसी चोट से मृत्यु हो जाती है, तो उसे न्याय संहिता की धारा 80 के अंतर्गत दहेज हत्या के रूप में ही देखा जाता है।

वर्ष 1961 में बनाए गए दहेज निरोधक अधिनियम के अंतर्गत दहेज लेना या देना अपराध है, मगर देखा यह गया है कि कानून एक तरफ है और समाज अपनी गति से चलता है। जैसे-जैसे उपभोक्ता वस्तुओं का बाजार बढ़ा है, दहेज की मांग भी उसी तरह सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती गई है। पहले जो काम साइकिल से चल जाता था, वह अब कार से भी नहीं चलता। बहुत से लोग ऐसे भी हैं, जो दहेज का इस रूप में समर्थन करते हैं कि नई गृहस्थी सुचारु रूप से चल सके, इसके लिए सामान के लेनदेन की प्रथा शुरू की गई।

एनसीआरबी के अनुसार 2017 से 2023 के पांच सालों में भारत में प्रति वर्ष दहेज के कारण सात हजार मृत्यु दर्ज की गईं। एनसीआरबी के आंकड़े के अनुसार 2023 में दहेज से संबंधित अपराधों में 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई और अदालतों में दहेज के हजारों मामले लंबित हैं। स्पष्ट है कि दहेज अब भी एक गंभीर समस्या है। कुछ समय पहले विश्व बैंक ने भारत के ग्रामीण इलाकों में हुई शादियों का एक अध्ययन किया था। इसमें पाया गया कि 95 प्रतिशत विवाह में दहेज दिया गया। इस अध्ययन से यह भी पता चला कि पांच सालों में छह हजार से अधिक हत्याओं के पीछे सीधे तौर पर दहेज का हाथ था।

ऐसे नारे आज भी दिखाई देते हैं कि दहेज लेना और देना अपराध है, लेकिन बढ़ते उपभोक्तावाद, दिखावे की इच्छा और तड़क-भड़क वाली शादियों की मांग ने दहेज में कई गुना वृद्धि की है। जिसका जितना बड़ा सरकारी पद, उसे उतना ही अधिक दहेज। इसमें दहेज देने वाले माता-पिता की भूमिका भी होती है। अफसोस यह कि लोग दूसरों के सामने उदाहरण पेश करते हैं कि देखो फलां के विवाह में इतनी नकदी और इतना सामान मिला, तो हमारा बेटा क्या किसी से कम है। कुछ साल पहले एक महिला ने बताया था कि उसके एक रिश्तेदार का यूपीएससी में चयन हो गया तो अगले ही दिन एक व्यक्ति सूटकेस भरकर नोट लेकर उनके घर पहुंच गया। हम अक्सर महिलाओं की स्थितियां सुधारने की बातें करते हैं, लेकिन न जाने क्यों दहेज जैसे राक्षस से नहीं निपट पाते। आज के दौर में जब बड़ी संख्या में लड़कियां पढ़-लिख रही हैं, अपने पांवों पर खड़ी हो रही हैं, तब दहेज को अपने आप खत्म हो जाना चाहिए था, लेकिन ऐसा हो नहीं रहा है। अध्ययन बताते हैं कि लड़कियों को गर्भ में मार देने के पीछे लड़के की चाहत के अलावा एक बड़ा कारण दहेज भी है।

अभियान

बचपन की उस डांट के पीछे छिपी हुई दादी की गहरी समझ और पैर हिलाने की रहस्यमयी दुनिया

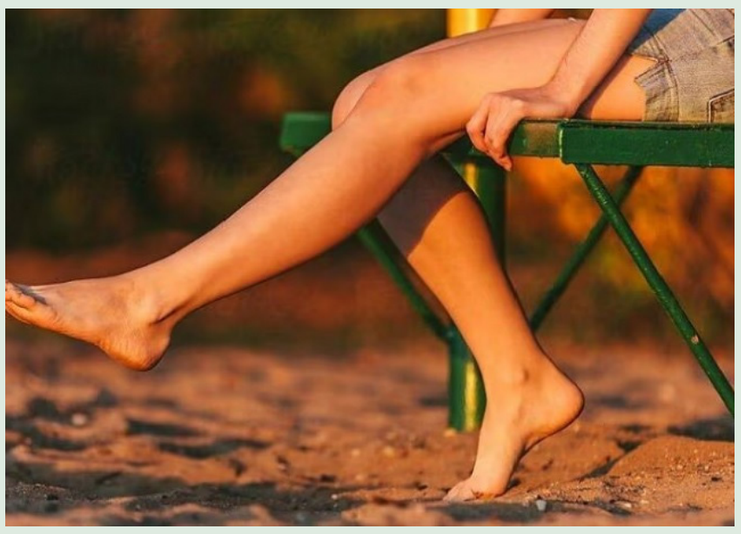

भारतीय घरों की शामें बहुत खास होती थीं। खाना अभी चूल्हे पर चढ़ा होता, आँगन में हल्की ठंडक फैलने लगती, और घर की बुजुर्ग दादी-नानी किसी खाट, चौकी या बिस्तर के कोने पर बैठी हुई पूरे घर को अपनी नजरों से संभाले रहतीं। बच्चों की छोटी-सी हलचल भी उनकी परखी हुई आँखों से बचती नहीं थी। ऐसे ही एक पुराने दिन की कल्पना करिए—एक बच्चा दिनभर खेल-कूदकर थका हुआ है, बिस्तर पर बैठा है और स्वभाववश अपने पैर हिला रहा है। बस उसी क्षण दादी की आवाज गूंजती है—"पैर मत हिलाओ अच्छा नहीं होता।"

यह डांट उस समय समझ नहीं आती थी, लेकिन आज जब हम पीछे मुड़कर सोचते हैं तो पता चलता है कि यह बात सिर्फ आदत सुधारने के लिए नहीं कही जाती थी। इसके पीछे अनुभवों की गहराई, मानसिक समझ का तालमेल, सामाजिक व्यवहार की मर्यादा और परिवार की ऊर्जा का संतुलन सबकुछ जुड़ा था।

जिस दौर में दादी-नानी पली-बढ़ीं, उस समय शरीर की हर हलचल को मन की खिड़की माना जाता था। वे मानती थीं कि अगर कोई बच्चा या बड़ा लगातार पैर हिलाए तो उसके भीतर कोई बेचैनी काम कर रही है। वे चेहरे पर भले मुस्कान देख लें, पर पैर की लय में छिपा हुआ मन का कंपन उनसे छिपता नहीं था। वे अपने भीतर बैठी सहज बुद्धि से समझ जाती थीं कि यह बच्चा मन से विचलित है, उसका ध्यान भटका हुआ है या उसके भीतर कुछ अशांत है। इसलिए वे धीमे लेकिन दृढ़ स्वर में कहती थीं—"बेटा, पहले मन को शांत करना सीखो, शरीर अपने आप शांत हो जाएगा।"

धर्म और परंपरा की भाषा में इस आदत को और भी गंभीरता दी गई। घरों में माना जाता था कि बैठकर पैर हिलाना अशुभ संकेत है। बुजुर्ग कहते थे कि ऐसा करने से घर की लक्ष्मी अस्थिर हो जाती हैं, क्योंकि लक्ष्मी का सीधा संबंध स्थिरता, अनुशासन और संयम से जोड़ा जाता था। एक घर जहाँ लोग शांत, संयमी और स्थिर हों, वहाँ धन, सौभाग्य और समृद्धि सहजता से आते हैं। इसलिए बुजुर्ग इस आदत को रोकते थे ताकि बच्चे में चंचलता नहीं, बल्कि संतुलन और स्थिरता का संस्कार पड़े।

परंपराएँ अक्सर किसी सख्त नियम की तरह दिखाई देती हैं, लेकिन असल में वे अनुभव का निचोड़ होती हैं। दादी किसी किताब का हवाला नहीं देती थीं, पर उनकी जीवन यात्रा ने उन्हें मनुष्य के स्वभाव को समझने का एक मौन कौशल दे दिया था। वे जानती थीं कि आदतें धीरे-धीरे स्वभाव बन जाती हैं और स्वभाव भविष्य। पैर हिलाने की छोटी-सी आदत भी इंसान के धैर्य, बैठने के तरीके, सोचने की लय और मन की दिशा पर गहरा असर डालती है।

आज का विज्ञान जब इस आदत को देखता है तो बताता है कि बार-बार पैर हिलाना कई बार रेस्टलेस लेग सिंड्रोम का लक्षण हो सकता है। यह न्यूरोलॉजिकल समस्या शरीर को लगातार किसी हलचल के लिए मजबूर करती है। कई बार यह आयरन की कमी, एंग्जायटी, नर्वस सिस्टम की थकान या तनाव का भी संकेत होता है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान कहता है कि यह बेचैनी सिर्फ आदत नहीं, बल्कि शरीर की किसी अंदरूनी समस्या का संकेत भी हो सकती है। यानी दादी की डांट किसी अंधविश्वास से नहीं, बल्कि शरीर की भाषा को पढ़ने की कला से आती थी। मनोविज्ञान की भाषा में इसे एक कॉपिंग मैकेनिज्म भी कहा जाता है—यानी तनाव को कम करने का अवचेतन रास्ता। जब मन किसी दबाव में होता है, तो शरीर पैर हिला कर स्वयं को स्थिर करने की कोशिश करता है। वह एक ऐसी लय बनाता है जिससे तनाव बाहर निकल सके। परंतु यह लय एक अस्थिरता भी पैदा करती है, और यही अस्थिरता दादी की तीखी निगाह पकड़ लेती थी।

रात के समय जब घर शांत हो जाता, दादी किसी बच्चे को गोदी में लिटाकर कहानी सुनातीं, और उसी कहानी में जीवन के अनेक अनकहे पाठ छिपे होते। वे समझातीं कि मन जितना शांत होगा, उतना ही जीवन स्पष्ट दिखेगा। वे चाहती थीं कि बच्चा बैठने का अनुशासन सीखे, अपने शरीर की लय को समझे और मन की शोर को शांत करने की कला जाने। उनके लिए यह केवल तमीज़ या शिष्टाचार नहीं था—यह जीवन जीने का तरीका था। और यही वजह है कि उनकी यह साधारण-सी लगने वाली सलाह पीढ़ियों तक चली—"पैर मत हिलाओ।"

यह सिर्फ एक डांट नहीं थी।

यह मन की स्थिरता का पाठ थी।

यह व्यवहार की शुरुआत थी।

यह स्वास्थ्य की चेतावनी थी।

यह घर की ऊर्जा को संतुलित रखने का प्रयास था।

और यह अनुभवों से निकला वह ज्ञान था जिसे किसी किताब ने नहीं लिखा—जिसे जीवन ने गढ़ा।

इसलिए जब भी हम याद करते हैं कि दादी-नानी हमें क्यों रोकती थीं, तब समझ आता है कि वे सिर्फ हमारा चलना-फिरना नहीं देखती थीं—वे हमारे मन की धड़कन, हमारे भविष्य का स्वरूप और हमारे भीतर की ऊर्जा की गति देख रही थीं। उनकी बातें छोटी थीं, पर अर्थ बहुत बड़े।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

देश के ग्रोथ इंजन गुजरात की एक और उपलब्धि प्रति व्यक्ति आय पहली बार 3 लाख रुपए के पार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात 8.42% की वृद्धि दर के साथ बना शीर्ष राज्य

(जीएनएस)। गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन और गुजरात में उनके द्वारा शुरू की गई विकास यात्रा को मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में गुजरात की प्रति व्यक्ति आय पहली बार 3 लाख रुपए को पार कर गई है, और राज्य ने आर्थिक प्रगति में नए मानदंड स्थापित किए हैं। इतना ही नहीं, सितंबर में समाप्त चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि 8.2 फीसदी दर्ज की गई है, जिसमें गुजरात का मजबूत प्रदर्शन रहा है। गुजरात के इस निरंतरतापूर्ण प्रदर्शन के कारण ही उसने भारत की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्थाओं में अपना स्थान बरकरार रखा है और इसीलिए उसे भारत का ग्रोथ इंजन कहा जाता है।

ताजा आंकड़ों के अनुसार गुजरात ने पिछले दशक में असाधारण वृद्धि हासिल की है। 2023-24 में 24.62 लाख करोड़ रुपए के सकल राज्य घरेलू उत्पादन (जीएसडीपी) के साथ, गुजरात ने अब महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक के बाद भारत की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में स्थान बना लिया है।

उल्लेखनीय है कि वृद्धि को सटीक तौर पर समझने के लिए दीर्घकालिक प्रदर्शन को वास्तविक दृष्टि यानी स्थित कीमतों पर मापा जाता है। यह मुद्रा स्फीति के प्रभाव को दूर करता है और उत्पादन एवं आर्थिक गतिविधियों में वास्तविक वृद्धि को दर्शाता है। इस आधार पर, गुजरात ने 2012-13 से 2023-24 की अवधि के दौरान 8.42 फीसदी की औसत वृद्धि दर हासिल की है, जो 10 लाख करोड़ रुपए से अधिक की अर्थव्यवस्था वाले सभी बड़े राज्यों में सबसे अधिक है। इसके साथ ही, गुजरात ने कर्नाटक (7.69%) और तमिलनाडु (6.29%) को भी पीछे छोड़ दिया है।

ऐसे समय में, जब बड़ी अर्थव्यवस्थाएं आम तौर पर संरचनात्मक संतृप्ति (स्ट्रक्चरल सैचुरेशन) के कारण सुस्त पड़ जाती हैं, गुजरात अपने मजबूत औद्योगिक आधार, निवेश-अनुकूल माहौल, मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर विकास और कुशल नीतियों के कारण विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर है।

जीएसडीपी के नए आंकड़ें यह बताते हैं कि गुजरात की अर्थव्यवस्था विभिन्न क्षेत्रों के मजबूत प्रदर्शन के कारण तेजी से बदल रही है। राज्य की अर्थव्यवस्था की रीढ़, मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने 2023-24 में 7.43 लाख करोड़ रुपए का योगदान दिया, जो सकल राज्य मूल्य वर्धन (जीएसवीए) का लगभग एक तिहाई हिस्सा है। इसके अलावा, कंस्ट्रक्शन और यूटिलिटी क्षेत्र का योगदान 2.31 लाख करोड़ रुपए और व्यापार, परिवहन, वित्तीय सेवाओं और रीयल एस्टेट जैसे क्षेत्रों का योगदान 7.81 लाख करोड़ रुपए रहा। वहीं, कृषि, वन और मत्स्यपालन जैसे पारंपरिक क्षेत्रों ने 3.69 लाख करोड़ रुपए का योगदान दिया, जिससे राज्य का समावेशी विकास सुनिश्चित हुआ है।

कुल मिलाकर, स्थिर मूल्यों पर गुजरात का सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) 2011-12 में 6.16 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर 2023-24 में 24.62 लाख करोड़ रुपए हो गया, जो एक दशक में लगभग चार गुनी वृद्धि दर्शाता है।

राज्य की प्रति व्यक्ति आय पहली बार 3 लाख रुपए के पार गुजरात ने आर्थिक क्षेत्र में एक नया मील का पत्थर स्थापित किया है और प्रति व्यक्ति आय पहली बार 3 लाख रुपए को पार कर गई है। गुजरात 3,00,957 रुपए प्रति व्यक्ति आय के साथ भारत की शीर्ष पांच सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है। यह आंकड़ा महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों से अधिक है, जो राज्य की उच्च श्रम उत्पादकता और व्यापक आर्थिक भागीदारी को दर्शाता है। मजबूत दीर्घकालिक विकास, उच्च प्रति व्यक्ति आय और लगातार बढ़ते आर्थिक आधार के साथ, गुजरात सबसे तेजी से बढ़ रही अर्थव्यवस्था बन गया है। 8.42% की वास्तविक वृद्धि दर के साथ गुजरात सुशासन, लचीलेपन और रणनीतिक कार्यान्वयन के एक मॉडल के रूप में उभरा है।

फियो ने 23वें इंडिया-रूस सालाना समिट के नतीजों की प्रशंसा की; संयुक्त वक्तव्य को संतुलित द्विपक्षीय व्यापार, औद्योगिक सहयोग और निर्यात ग्रोथ के लिए एक मज़बूत प्रोत्साहन बताया

(जीएनएस)। नई दिल्ली, 5 दिसंबर, 2025: : फ़ेडरेशन ऑफ़ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइज़ेशन्स (फियो) ने 23वें इंडिया-रूस सालाना समिट के बाद जारी संयुक्त वक्तव्य का स्वागत किया है और इसे दोनों देशों के बीच व्यापार आर्थिक, टेक्नोलॉजिकल और कनेक्टिविटी साझीदारी को मज़बूत करने की दिशा में एक बड़ा कदम बताया है।

इन घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, फियो अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने कहाः "संयुक्त वक्तव्य इंडिया-रूस व्यापार और आर्थिक सहयोग को गहरा करने के लिए एक साफ़ और बड़ा रोडमैप दिखाता है। संतुलित और स्थायी व्यापार ग्रोथ, बेहतर औद्योगिक सहयोग, लॉजिस्टिक्स कनेक्टिविटी और नई टेक्नोलॉजी पर आधारित साझीदारी पर ज़ोर देना, दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का एक मज़बूत संकेत देता है। निर्यातक इस स्पेशल और प्रिविलेज्ड स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप की पूरी क्षमता को प्रकट करने पर इंडिया के नए फोकस से उत्साहित हैं।"

श्री रल्हन ने कहा कि प्रोग्राम 2030 और 2030 तक दोनों देशों के बीच 100 बिलियन डॉलर के व्यापार की तरफ काम करने का पक्का इरादा एक बड़ा पड़ाव है। उन्होंने कहा, "टैरिफ और नॉन-टैरिफ रुकावटों को दूर करने, लॉजिस्टिक्स लिंक को बेहतर बनाने, पेमेंट के आसान तरीके पक्का करने और इंश्योरेंस और रीइंश्योरेंस फ्रेमवर्क को मजबूत करने की प्रतिबद्धता रूस को भारत के निर्यात को बढ़ाने के लिए बहुत ज़रूरी होगा। ये वही दिक्कतें हैं जिनका हमारे निर्यातक सामना कर रहे हैं, और यह देखकर अच्छा लगता है कि उन्हें सबसे ऊंचे लेवल पर प्राथमिकता दी जा रही है। जैसे-जैसे व्यापार वॉल्यूम बढ़ रहा है, यह ज़रूरी है कि व्यापार बास्केट और ज़्यादा डायवर्सिफाइड और संतुलित हो, जिससे दोनों अर्थव्यवस्थाओं के लिए लंबे समय तक निर्वहनीयता पक्की हो।"

फियो ने एडवांस्ड हाई-टेक्नोलॉजी सेक्टर, इंडस्ट्रियल क्लस्टर, इन्वेस्टमेंट प्रमोशन और जॉइंट वेंचर में गहरे सहयोग के लिए नेताओं की कोशिशों पर ज़ोर दिया। श्री रल्हन ने कहाः "समिट के नतीजों से इंजीनियरिंग गुड्स, फार्मास्यूटिकल्स, एग्रो-प्रोडक्ट्स, टेक्सटाइल, जेम्स एंड ज्वेलरी, और टेक्नोलॉजी सर्विसेज़ जैसे सेक्टर में भारतीय निर्यातकों के लिए नए रास्ते खुलेंगे। मज़बूत औद्योगिक साझीदारी से न सिर्फ़ व्यापार में विविधता आएगी, बल्कि दोनों देशों के बीच लंबे समय तक सप्लाई-चेन में मज़बूती भी आएगी। इसके अलावा, रशियन मार्केट में ऑनलाइन कंज्यूमर गुड्स की बढ़ती मांग भारतीय निर्यातकों के लिए ई-कॉमर्स से चलने वाले रिटेल निर्यात -खासकर लाइफस्टाइल प्रोडक्ट्स, हेल्थ और वेलनेस, होम डेकोर और वैल्यू-एडेड फूड आइटम्स जैसी कैटेगरी - में बड़े अवसर देती है।"

फियो ने नेशनल करेंसी में द्विपक्षीय सेटलमेंट, पेमेंट और फाइनेंशियल मैसेजिंग सिस्टम की इंटरऑपरेबिलिटी, और डिजिटल करेंसी प्लेटफॉर्म पर कंसल्टेशन को बढ़ाने के एग्रीमेंट का भी स्वागत किया। श्री रल्हन ने कहा, "मज़बूत और अंदाज़ा लगाने लायक पेमेंट सिस्टम की तरफ़ बढ़ने से व्यापार ट्रांज़ैक्शन काफ़ी आसान हो जाएँगे और भारतीय निर्यातकों के लिए अनिश्चितताएँ कम होंगी। यह इंडिया-रूस व्यापार फ़्लो को स्थिर करने की दिशा में एक बड़ा बदलाव लाने वाला कदम है।"

फियो ने ऑयल और गैस, पेट्रोकेमिकल्स, एलएनजी / एलपीजी इंफ़ास्ट्रक्चर और न्यूक्लियर प्रोजेक्ट्स समेत एनर्जी में फिर से पक्के सहयोग और निवेशकों के मुद्दों को तेज़ी से हल करने की प्रतिबद्धता की तारीफ़ की। श्री रल्हन ने कहा, "स्थिर एनर्जी सहयोग भारत की औद्योगिक कॉम्पिटिटिवनेस के लिए ज़रूरी है, और इससे अप्रत्यक्ष रूप से कई तरह के निर्यातोन्मुखी क्षेत्रों को फ़ायदा होगा।"

फियो ने आईएनएसटीसी, चेन्नई-व्लादिवोस्तोक मैरीटाइम कॉरिडोर जैसे ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर को मज़बूत करने और नॉर्दर्न सी रूट पर सहयोग पर नेताओं के फ़ोकस की तारीफ़ की। श्री रल्हन ने कहा, "बढ़ी हुई कनेक्टिविटी से लॉजिस्टिक्स लागत कम होगी, ट्रांज़िट का अंदाज़ा बेहतर होगा और भारतीय वस्तुओं के लिए रूस और बड़े यूरेशियन रीजन में नए अवसर खुलेंगे।" फियो ने रशियन फ़ार ईस्ट और आर्कटिक में बढ़े हुए सहयोग का भी स्वागत किया, जिसमें खेती, मिनरल, मैनपावर मोबिलिटी, फार्मास्यूटिकल्स, समुद्री ट्रांसपोर्ट और डायमंड के अवसर शामिल हैं।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद शॉपिंग फेस्टिवल का उद्घाटन किया

श्री अमित शाह और श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद शॉपिंग फेस्टिवल कार्निवल परेड को हरी झंडी दिखाई

(जीएनएस)। गांधीनगर : केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने शुक्रवार को अहमदाबाद महानगर पालिका और राज्य सरकार के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'अहमदाबाद शॉपिंग फेस्टिवल (एएसएफ) 2025-26' का शानदार शुभारंभ किया।

इस फेस्टिवल के शुभारंभ अवसर पर श्री अमित शाह और श्री भूपेंद्र पटेल ने अहमदाबाद शॉपिंग फेस्टिवल कार्निवल परेड को हरी झंडी दिखाई और शॉपिंग फेस्टिवल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर ऊर्जा मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल भी उपस्थित रहे।

केंद्रीय गृह मंत्री एवं मुख्यमंत्री ने शॉपिंग फेस्टिवल के विभिन्न स्टॉलों का दौरा किया। महानुभावों ने स्वदेशी वस्तुओं की खरीदारी की और डिजिटल पेमेंट कर लोगों को प्रोत्साहित किया।

अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, अहमदाबाद शहर के सभी विधायक और पार्षदगण, उप महापौर श्री जतिन पटेल, मनपा स्थाई समिति के अध्यक्ष श्री देवांग दाणी, शासक पक्ष के नेता श्री गौरांग प्रजापति, सचेतक श्रीमती शीतल डागा और चीफ कमिश्नर ऑफ स्टेट टैक्स श्री राजीव टोपनो, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि, मनपा की विभिन्न समितियों के चेयरमैन, शहर अध्यक्ष श्री प्रेरक शाह और अहमदाबाद महानगर पालिका के अधिकारी एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

उल्लेखनीय है कि 5 दिसंबर, 2025 से 16 जनवरी, 2026 तक चलने वाला यह रिटेल, लाइफस्टाइल और एंटरटेनमेंट का विशाल महोत्सव प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'वोकल फॉर लोकल' के संकल्प को साकार करने के साथ ही शहर के व्यापार और पर्यटन क्षेत्र में एक नई ऊर्जा भरेगा। 'स्वदेशी विद ग्लोबल अपील' की थीम पर आधारित इस फेस्टिवल के दूसरे संस्करण के लिए नगरजनों में उत्साह देखने को मिल रहा है।

इस वर्ष अहमदाबाद शॉपिंग फेस्टिवल (एएसएफ) के अंतर्गत शहर के 6 मुख्य शॉपिंग डिस्ट्रिक्ट और 12 से अधिक हॉटस्पॉट जोन तैयार किए गए हैं, जिनमें सिंधु भवन रोड, सीजी रोड, निकोल मॉडर्न स्ट्रीट, कांकरिया-रामबाग रोड, वस्त्रापुर, प्रहलाद नगर, साइंस सिटी, रिवरफ्रंट, लॉ गार्डन और माणेक चौक सहित अन्य क्षेत्र एवं शहर के अग्रणी मॉल शामिल हैं। पूरे शहर में शॉपिंग, मनोरंजन, फूड एवं आर्टिजन मार्केट का अद्भुत समन्वय देखने को मिलेगा।

इस फेस्टिवल के दौरान फूड फेस्टिवल, लाइव म्यूजिक शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कॉमेडी और काव्य संध्या, खेल गतिविधियां, युवा जोन और फैमिली एंटरटेनमेंट जोन सहित कई कार्यक्रम नागरिकों और पर्यटकों के लिए खुले रहेंगे।

शहर के नागरिक और विदेशी सैलानियों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए हेरिटेज वॉकिंग टूर्स और सिंधु भवन रोड पर वेडिंग शॉपिंग एक्सपीरियंस जोन, इस सीजन की वेडिंग शॉपिंग को प्रीमियम टच देंगे। इस फेस्टिवल में मेजर ब्रांड्स, होटल, मॉल, रिटेल, क्लॉदिंग, गिफ्ट, रेस्टोरेन्ट और अन्य क्षेत्रों से जुड़े ब्रांड भागीदार बने हैं।

फेस्टिवल को डिजिटल रूप से सुलभ बनाने के लिए एएसएफ का अधिकृत मोबाइल ऐप और वेब पोर्टल लॉन्च किए गए हैं। ऐप के माध्यम से विशेष ऑफर, इंटरेक्टिव मैप, इवेंट के रीयल-टाइम अपडेट तथा एएमटीएस (सिटी बस) और बीआरटीएस में फेस्टिवल के दौरान निःशुल्क यात्रा की सुविधा वाले शॉपर पास के साथ-साथ विशेष डील और लकी ड्रॉ का अवसर मिलेगा।

इस वर्ष एएसएफ में 8000 से अधिक व्यवसायी जुड़े हैं, जिनमें रिटेल स्टोर्स, मॉल, एमएसएमई, होटल, रेस्टोरेन्ट, कारीगर और प्रीमियम ब्रांड का समावेश होता है। शहर में वोकल फॉर लोकल को प्रोत्साहन देने के लिए वस्त्रापुर में स्वदेशी मॉल, कॉटेज इंडस्ट्री प्रदर्शनी और स्थानीय कारीगरों की विशेष भागीदारी भी आकर्षण का केंद्र बनेगी।

गांधीनगर लोकसभा सांसद और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की प्रोत्साहक उपस्थिति में 'सांसद खेल महोत्सव 2025' का समापन समारोह आयोजित

▸▸ 21 सितंबर से 5 दिसंबर के दौरान 'फिट युवा फॉर विकसित भारत' के सूत्र के साथ गांधीनगर लोकसभा सांसद खेल महोत्सव के तहत 9 विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित

▸▸ वीर सावरकर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी की प्रोत्साहक उपस्थिति

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह :-

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पांच वर्ष पहले दिया गया 'सांसद खेल महोत्सव' के आयोजन का विचार आज वटवृक्ष बन गया

▸▸ हारने के बाद जीतने की सीख के साथ जुनून से आगे बढ़ने का गुण हमें हर क्षेत्र में आगे ले जाता है

▸▸ वर्ष 2014 से 2025 तक केंद्र सरकार का खेल क्षेत्र का बजट पांच गुना बढ़ा

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल :-

▸▸ कॉमनवेल्थ गेम्स के आयोजन के साथ गुजरात दुनिया का स्पोर्ट्स हब बनेगा

▸▸ सांसद खेल महोत्सव सामाजिक समरसता, समानता और क्षमता का अनूठा उदाहरण

▸▸ अहमदाबाद केवल देश ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया की खेल राजधानी बनेगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : गांधीनगर लोकसभा सांसद और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की प्रोत्साहक उपस्थिति में शुक्रवार शाम अहमदाबाद में 'सांसद खेल महोत्सव 2025' का समापन समारोह आयोजित हुआ।

वीर सावरकर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, नारणपुरा में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल और उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी मौजूद रहे।

समापन समारोह में गांधीनगर लोकसभा सांसद और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह एवं उपस्थित महानुभावों के करकमलों से अंडर-17 और ओपन एज ग्रुप में कबड्डी, खो-खो और वॉलीबॉल प्रतियोगिता की विजेता टीमों को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पांच वर्ष पहले सांसद खेल महोत्सव के आयोजन का विचार दिया था। यह विचार आज वटवृक्ष बन गया है। सांसद खेल महोत्सव के अंतर्गत देश में 300 से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों में लाखों खिलाड़ी खेल खेलने के साथ-साथ फिटनेस और स्वास्थ्य प्राप्त कर रहे हैं। इसके साथ ही, अनेक खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा विकसित करने का प्लेटफॉर्म मिला है, जिससे टैलेंट खोज की शुरुआत हुई है।

उन्होंने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी जब मुख्यमंत्री थे, तब उन्होंने गुजरात में खेल महाकुंभ शुरू किया था, आज देश के प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश के युवाओं में खेल के प्रति जिज्ञासा पैदा करने के साथ ही सुविधा, प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा की प्रेरणा दी है।

श्री शाह ने कहा कि व्यक्ति के जीवन में खेल का विशेष महत्व है। हारने के बाद जीतने की सीख के साथ जुनून के साथ आगे बढ़ने का गुण हमें हर क्षेत्र में आगे ले जाता है, साथ ही साथ विजेता खिलाड़ी को बिना अहंकारी हुए खेल भावना से आगे बढ़ने की शिक्षा देता है।

उन्होंने गांधीनगर लोकसभा में हुए महोत्सव की जानकारी देते हुए कहा कि तीन चरणों में आयोजित खेलोत्सव में 1.57 लाख से अधिक खिलाड़ियों ने पंजीकरण कराया था, जिनमें 87 हजार पुरुष और 70 हजार महिला खिलाड़ी शामिल थे। उन्होंने महिलाओं से अपील की कि वे आगामी समय में अधिक से अधिक संख्या में पंजीकरण कराएं।

उन्होंने 8500 विजेता खिलाड़ियों को बधाई देने के साथ ही पराजित खिलाड़ियों का आह्वान किया कि वे जिजीविषा और महत्वाकांक्षा को जीवन का प्रेरणास्रोत बनाकर आगे बढ़ें।

केंद्रीय गृह मंत्री ने आणंद में 59 हजार खिलाड़ियों के पंजीकरण के लिए पदाधिकारियों को बधाई देते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री ने सांसदों से जो अपील की थी, वह आज युवाओं के लिए मार्गदर्शक बन गई है।

उन्होंने कहा कि खेल के जरिए अनुशासन, ध्येय, टीम भावना और खेल भावना जैसे गुणों का विकास होता है। इसके साथ ही, सांसद खेल महोत्सव से प्रतिभा की पहचान और स्व-परिचय के अलावा फिट इंडिया मूवमेंट और नशा मुक्त भारत अभियान को आगे बढ़ाने का काम भी होता है।

श्री शाह ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के खिलाड़ियों को उचित प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराने के लिए अनेक योजनाएं शुरू की हैं। वर्ष 2014 में केंद्र सरकार का खेल क्षेत्र का बजट 800 करोड़ रुपए था, जो 2025 में पांच गुना बढ़कर 4000 करोड़ रुपए हो गया है। उन्होंने कहा कि देश में सुनियोजित स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर और अन्य सुविधाओं के कारण विभिन्न महत्वपूर्ण प्रतियोगिताओं में भारत के मैडलों की संख्या भी बढ़ गई है।

उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भारतीय खिलाड़ियों द्वारा जीते गए मेडल की चर्चा करते हुए कहा कि वर्ष 2014 में आयोजित कॉमनवेल्थ खेलों में हमारे खिलाड़ियों ने 15 मेडल जीते थे, जिनकी संख्या बढ़कर 2018 में 26 और 2022 में 22 हो गई। एशियाई खेलों में हमारे खिलाड़ियों ने पहले के 57 मेडल के मुकाबले 107 मेडल जीते। जबकि पैरा एशियन गेम्स में पहले 33 मेडल थे, जो बढ़कर 111 हो गए।

श्री शाह ने उम्मीद जताई कि जब भारत में ओलंपिक खेल आयोजित होंगे तब हमारा स्थान पदक तालिका में शीर्ष पांच में होगा। उन्होंने उपस्थित सभी लोगों से व्यसन मुक्त रहने और अधिक से अधिक पौधरोपण करके ग्रीन कवर को बढ़ाने में अपना योगदान देने की अपील की।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के सफल प्रयासों के परिणामस्वरूप अहमदाबाद को 2030 के कॉमनवेल्थ खेलों की मेजबानी करने का गौरव मिला है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में हम देश और राज्य में स्पोर्ट्स क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव देख रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने उम्मीद जताई कि कॉमनवेल्थ गेम्स के आयोजन के साथ ही गुजरात दुनिया का स्पोर्ट्स हब बनेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में गुजरात में 'खेले ते खिले' यानी जो खेलेगा, वह खिलेगा के मंत्र के साथ खेल महाकुंभ की शुरुआत की थी। खेल महाकुंभ ने राज्य के गांव-गांव से लेकर शहरों तक के युवाओं को खेल के प्रति प्रोत्साहित करने के साथ-साथ राज्य की खेल संस्कृति को एक नई दिशा दी है। प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने इसी मॉडल को 'खेलो इंडिया' के जरिए देश में स्थापित किया है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने देश में खेल संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र में सांसद खेल महोत्सव आयोजित करने की प्रेरणा दी है। आज सांसद खेल महोत्सव इवेंट एक महत्वपूर्ण खेल इवेंट और फिट इंडिया मूवमेंट की संवाहक बन गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने विकसित भारत के निर्माण के लिए नशा मुक्त भारत के निर्माण की बात कही है। सांसद खेल महोत्सव के कारण आज समाज के युवा खेलकूद की ओर आकर्षित हुए हैं। यह खेल महोत्सव समाज के हर वर्ग, हर क्षेत्र और हर क्षमता के खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि सभी एक साथ विभिन्न खेलों में हिस्सा लेकर सामाजिक समरसता, समानता और क्षमता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

गांधीनगर सांसद खेल महोत्सव की बात करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री अमित शाह के गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में 9 से 60 वर्ष तक की उम्र के कुल 1,50,000 खिलाड़ियों ने विभिन्न खेलों में हिस्सा लिया, जिनमें से 8000 से अधिक खिलाड़ी विभिन्न खेलों में विजेता बने हैं। उन्होंने कहा कि श्री अमित शाह ने गांधीनगर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र को सबसे हरा-भरा निर्वाचन क्षेत्र बनाने के संकल्प के साथ ही इसका भी विशेष ध्यान रखा है कि उनके निर्वाचन क्षेत्र के नागरिक फिट इंडिया मूवमेंट के एंबेसडर बने और स्वस्थ एवं तंदुरुस्त रहें।

उन्होंने कहा कि श्री शाह के मार्गदर्शन में अहमदाबाद और गांधीनगर में बड़े पैमाने पर स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास हो रहा है। वीर सावरकर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स उनके विजन का उत्कृष्ट उदाहरण है। 2036 तक अहमदाबाद में लगभग 13 अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन होने वाला है। ऐसे में आने वाले दिनों में अधिक से अधिक स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास होगा। अहमदाबाद अब केवल देश की ही नहीं, बल्कि पूरे एशिया की खेल राजधानी के रूप में उभरकर आएगा।

मुख्यमंत्री ने विकसित भारत के निर्माण में प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए पांच प्रणों में से एक नागरिक धर्म का पालन करके फिटनेस को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का सभी से अनुरोध किया।

उल्लेखनीय है कि 21 सितंबर से 05 दिसंबर के दौरान 'फिट युवा फॉर विकसित भारत' के सूत्र के साथ गांधीनगर लोकसभा सांसद खेल महोत्सव का आयोजन किया गया था, जिसमें मल्लखंभ, एथलेटिक्स, वॉलीबॉल, कबड्डी, खो-खो, स्विमिंग, बैडमिंटन, शतरंज और योगासन सहित कुल 9 खेलों में खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समापन समारोह में सांसद खेल महोत्सव 2025 की विस्तृत जानकारी देने वाली एक ऑडियो-वीडियो फिल्म भी प्रदर्शित की गई।

सांसद खेल महोत्सव 2025 के समापन समारोह में ऊर्जा और पेट्रोलियम मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल, खेल एवं युवा सेवा राज्य मंत्री डॉ. जयरामभाई गामित, अहमदाबाद की महापौर श्रीमती प्रतिभा जैन, गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, अहमदाबाद शहर और ग्रामीण के विधायक तथा अहमदाबाद और गांधीनगर जिला पंचायतों के अध्यक्ष और अग्रणी श्री प्रेरक शाह, श्री शिल्पाबेन पटेल, श्री शैलेषभाई दावड़ा, श्री अनिलभाई पटेल, डॉ. आशिषभाई दवे उपस्थित थे।

पश्चिम रेलवे चलाएगी चार जोड़ी स्पेशल ट्रेनें

(जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा और यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से, पश्चिम रेलवे द्वारा मुंबई सेंट्रल – भिवानी, मुंबई सेंट्रल – शकूर बस्ती, बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा एवं वलसाड – बिलासपुर स्टेशनों के बीच विशेष किराये पर स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

1. ट्रेन संख्या 09001/09002 मुंबई सेंट्रल – भिवानी सुपरफास्ट स्पेशल (द्विसाप्ताहिक)
[14 फेरे]

ट्रेन संख्या 09001 मुंबई सेंट्रल – भिवानी सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक मंगलवार एवं शुक्रवार को 10.30 बजे मुंबई सेंट्रल से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 13.00 बजे भिवानी पहुंचेगी। यह ट्रेन 09 दिसम्बर से 30 दिसम्बर, 2025 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09002 भिवानी – मुंबई सेंट्रल सुपरफास्ट स्पेशल प्रत्येक बुधवार एवं शनिवार को 14.35 बजे भिवानी से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 16.30 बजे मुंबई सेंट्रल पहुंचेगी। यह ट्रेन 10 दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2025 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, मंदसौर, नीमच, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बिजयनगर, नसीराबाद, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, गांधी नगर जयपुर, बांदीकुई, अलवर, रेवाड़ी, कोसली और चरखी दादरी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी-3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 09003/09004 मुंबई सेंट्रल – शकूर बस्ती सुपरफास्ट स्पेशल (32 फेरे)

ट्रेन संख्या 09003 मुंबई सेंट्रल – शकूर बस्ती स्पेशल मंगलवार एवं शुक्रवार को छोड़कर सभी दिनों में 10.30 बजे मुंबई सेंट्रल से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 08.00 बजे शकूर बस्ती पहुंचेगी। यह ट्रेन 08 दिसम्बर से 29 दिसम्बर, 2025 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09004 शकूर बस्ती – मुंबई सेंट्रल स्पेशल बुधवार एवं शनिवार को छोड़कर सभी दिनों में 10.15 बजे शकूर बस्ती से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 10.30 बजे मुंबई सेंट्रल पहुंचेगी। यह ट्रेन 09 दिसम्बर से 30 दिसम्बर, 2025 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, नागदा, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, हिंडौन सिटी, भरतपुर, मथुरा, कोसी कलां एवं दिल्ली सफदरजंग स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी-3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

3. ट्रेन संख्या 09730/09729 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल (02 फेरे)

ट्रेन संख्या 09730 बांद्रा टर्मिनस – दुर्गापुरा सुपरफास्ट स्पेशल सोमवार, 08 दिसम्बर 2025 को 10.00 बजे बांद्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 05.30 बजे दुर्गापुरा पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09729 दुर्गापुरा – बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल रविवार, 07 दिसम्बर 2025 को 12.25 बजे दुर्गापुरा से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 07.00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाड, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, रतलाम, नागदा, भवंनी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर एवं बनस्थली निवाई स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में फर्स्ट एसी, एसी-2 टियर, एसी-3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

4. ट्रेन संख्या 08244/08243 वलसाड – बिलासपुर स्पेशल (08 फेरे)

ट्रेन संख्या 08244 वलसाड – बिलासपुर स्पेशल प्रत्येक शुक्रवार को 16.50 बजे वलसाड से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 13.50 बजे बिलासपुर पहुंचेगी। यह ट्रेन 19 दिसम्बर 2025 से 09 जनवरी 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 08243 बिलासपुर – वलसाड स्पेशल प्रत्येक गुरुवार को 16.00 बजे बिलासपुर से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 13.50 बजे वलसाड पहुंचेगी। यह ट्रेन 18 दिसम्बर 2025 से 08 जनवरी 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में भेस्तान, चलथान, नंदुरबार, अमलनेर, जलगांव, भुसावल, मलकापुर, अकोला, बड़नेरा, वर्धा, नागपुर, गोंदिया, डोंगरगढ़, राजनांदगांव, दुर्ग, रायपुर एवं भाटापारा स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी-2 टियर, एसी-3 टियर, स्लीपर क्लास और जनरल सेकेंड क्लास कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09003 एवं 09730 की बुकिंग 06.12.2025 से, ट्रेन संख्या 09001 की बुकिंग 07.12.2025 से तथा ट्रेन संख्या 08244 की बुकिंग 08.12.2025 से सभी पीआरएस काउंटरों एवं आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन के कार्य हेतु ब्लॉक लिए जाने के कारण भावनगर मंडल की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के भावनगर टर्मिनस स्टेशन यार्ड में पिट लाइन संख्या–2 के मरम्मत कार्य हेतु 08 दिसंबर, 2025 से आगामी 45 दिनों तक ब्लॉक किए जाने के कारण कुछ ट्रेनों के संचालन में अस्थायी परिवर्तन किए गए हैं। इस अवधि के दौरान ट्रेनों का निरस्तीकरण, शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन तथा पुनर्निर्धारण किया गया है। यात्रियों से अनुरोध है कि यात्रा से पूर्व संबंधित जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार प्रभावित ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैः

निरस्त (Cancel) की जाने वाली ट्रेनें (दैनिक – दो-दो फेरे)

दिनांक 08.12.2025 से निम्न ट्रेनें निरस्त (Cancel) रहेंगी –

1. 59228/59233 (भावनगर–सुरेंद्रनगर–भावनगर)
2. 59267/59268 (भावनगर–पालिताना–भावनगर)
3. 59269/59270 (भावनगर–पालिताना–भावनगर)

4. 59229/59230 (भावनगर–बोटाद–भावनगर)
5. 59204/59271 (भावनगर–बोटाद–भावनगर)
6. 59235/59236 (धोला-महुवा-धोला)
7. 09529/09530 (धोला–भावनगर–धोला टीओडी स्पेशल)

शॉर्ट टर्मिनेशन/ओरिजिनेशन (Short Termination/Origination)

1. ट्रेन संख्या 19209 (भावनगर–ओखा) प्रत्येक सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं रविवार को राजकोट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी (सप्ताह में 04 फेरे)। अर्थात् यह ट्रेन शुक्रवार, शनिवार और मंगलवार को भावनगर टर्मिनस से चलकर ओखा तक जाएगी, बाकी दिन (रविवार, सोमवार, बुधवार और गुरूवार) भावनगर से चलकर राजकोट तक जाएगी।
2. ट्रेन संख्या 19210 (ओखा–भावनगर) प्रत्येक सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं रविवार को राजकोट स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी (सप्ताह में 04 फेरे)। यह ट्रेन सोमवार, बुधवार, गुरुवार एवं रविवार को राजकोट स्टेशन से प्रस्थान करेगी अर्थात् यह ट्रेन राजकोट से चलकर भावनगर तक जाएगी। यह ट्रेन मंगलवार, शुक्रवार एवं शनिवार को अपने निर्धारित समयानुसार ओखा से चलकर भावनगर तक जाएगी।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त किसी भी ट्रेन के समय में परिवर्तन नहीं किया गया है। उपरोक्त दोनों ट्रेनें अपने निर्धारित समयानुसार हीं चलेंगी।

पुनर्निर्धारित ट्रेनें (Rescheduled Trains)

1. ट्रेन संख्या 12972 (भावनगर–बान्द्रा टर्मिनस) 08.12.2025 से प्रत्येक मंगलवार एवं गुरुवार को 2 घंटा 30 मिनट विलंब से चलेगी।
2. ट्रेन संख्या 59558 (भावनगर–वेरावल) प्रत्येक शनिवार को अपने निर्धारित समय से 3 घंटा विलंब से चलेगी।
3. ट्रेन संख्या 20966 (भावनगर–गांधीग्राम) प्रत्येक रविवार एवं गुरुवार को 30 मिनट विलंब से चलेगी।
4. ट्रेन संख्या 19271 (भावनगर–हरिद्वार) प्रत्येक गुरुवार को 3 घंटा विलंब से चलेगी।

उक्त सभी परिवर्तन 45 दिनों तक या पिट लाइन संख्या–2 के पूर्ण रूप से परिचालन में आने तक लागू रहेंगे। आम जनता को विभिन्न माध्यमों से इसकी व्यापक जानकारी दी जा रही है।

यात्रियों से अनुरोध है कि असुविधा से बचने के लिए यात्रा से पूर्व संबंधित स्टेशन अथवा रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in से अद्यतन जानकारी प्राप्त करें।

वडोदरा मंडल के प्रयासों से वासद - कठाणा खंड पर 7 दिसंबर से फिर दौड़ेगी डेमू ट्रेन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा वासद - कठाणा खंड पर डेमू सेवा को 7 दिसंबर से रि-इंट्रोडूयूस किया जा रहा है। गुजरात में इस वर्ष आयी बाढ़ से इस क्षेत्र के सड़क मार्ग के साथ साथ इस रेल खंड को भी बहुत नुकसान हुआ था। माननीय जनप्रतिनिधिओं एवं यात्रिओं के मांग पर तत्परता दिखाते हुए वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के निर्देशन में वासद - कठाना खंड पर यात्री सेवा को बहाल किया जा रहा है। पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस

KATHANA

विज्ञप्ति के अनुसार कोविड काल में यात्रिओं की स्वास्थ्य सुरक्षा को देखते हुए भारतीय रेल द्वारा यात्री सेवाओं को बंद किया गया था, जिसे कोविड काल के बाद चरणबद्ध रूप से बहाल किया जा रहा है। गुजरात में इस वर्ष आयी बाढ़ से इस क्षेत्र के सड़क मार्ग के साथ साथ इस रेल खंड को भी बहुत नुकसान हुआ था। रेलवे ट्रैक के साथ साथ इस खंड के स्टेशनों की बिल्डिंग की भी क्षति हुई थी। सड़क मार्ग द्वारा आवागमन में जनता को आ रही दिक्कतों को देखते हुए जनप्रतिनिधियों की मांग थी कि जनता के लिए ट्रेन सेवा यात्रा का सुगम माध्यम है,जिससे समय की भी बचत होती है। यह ट्रेन सेवा जल्द उपलब्ध कराई जाये, जिससे इस क्षेत्र के व्यापारिओं, छात्रों आदि को सुविधा उपलब्ध हो सके जो व्यापार या पढ़ाई के लिए दूसरे स्थान विशेषकर वडोदरा की यात्रा करते हैं।

माननीय जनप्रतिनिधिओं की मांग पर अमल करते हुए एवं यात्रिओं के मांग पर तत्परता दिखाते हुए विपरीत परिस्थिति के बावजूद वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके के निर्देशन में अधिकारिओं एवं रेलकर्मियों की मेहनत एवं प्रयासों से वासद - कठाना खंड पर ट्रेन सेवा को रि-इंट्रोडूयूस किया जा रहा है।

बाढ़ से प्रभावित एवं डैमेज खंड पर बैलास्ट फाइलिंग, टैंपरिंग जैसे ट्रैक वर्क किये गए हैं। लेवल क्रासिंग रिपेयरिंग वर्क के अंतर्गत लिफ्टिंग बैरियर की रिपेयरिंग की गयी एवं रोडसाइड बोर्डों को लगाकर अप्रोच रोड को दुरुस्त किया गया। स्टेशन पर कवरशेड, प्लेटफार्म, एप्रोच रोड की मरम्मत के साथ साथ स्टेशन भवन की प्लास्टरिंग एवं रिपेरिंग जैसे कार्य कर इससे ट्रेन परिचालन के लिए उपयुक्त बनाया गया।

पश्चिम रेलवे का वडोदरा मंडल यात्रिओं को बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए हमेशा प्रतिबध्द है।

6 से 9 दिसंबर तक साबरमती-योगनगरी ऋषिकेश योगा एक्सप्रेस मेरठ सिटी तक जाएगी

(जीएनएस)। उत्तर रेलवे के देहारादून स्टेशन पर लोको पिट साइडिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण साबरमती-योगनगरी ऋषिकेश योगा एक्सप्रेस मेरठ सिटी और योगनगरी ऋषिकेश के बीच आंशिक निरस्त रहेगी। जो इस प्रकार हैः

6 दिसंबर से 9 दिसंबर 2025 तक साबरमती से चलने वाली ट्रेन संख्या 19031 साबरमती-योगनगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस मेरठ सिटी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी, इस प्रकार यह ट्रेन मेरठ सिटी और योगनगरी ऋषिकेश के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

7 दिसंबर से 10 दिसंबर 2025 तक ट्रेन संख्या 19032 योगनगरी ऋषिकेश-साबरमती एक्सप्रेस योगनगरी ऋषिकेश के स्थान पर मेरठ सिटी से प्रस्थान करेगी, इस प्रकार यह ट्रेन योगनगरी ऋषिकेश-मेरठ सिटी के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

ट्रेनों के समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

आगामी VGRC, राजकोट में गुजरात की ब्लू इकोनॉमी और सतत तटीय विकास पर होगा शानदार प्रदर्शन

▸▸ वर्ष 2024–25 में समुद्री मत्स्य उत्पादन 7,64,343 मीट्रिक टन रहा, जो 2023–24 की तुलना में 14% से अधिक है

▸▸ सौराष्ट्र क्षेत्र ने 2024–25 में 5,42,333 मीट्रिक टन और कच्छ ने 67,547 मीट्रिक टन उत्पादन दर्ज किया

▸▸ सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र गुजरात के कुल समुद्री मत्स्य उत्पादन में लगभग 80% योगदान देते हैं

(जीएनएस)। गांधीनगर : माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'समुद्र से समृद्धि' के विज़न को साकार करने के लिए, गुजरात अपने मछली पालन क्षेत्र की तेज़ प्रगति के माध्यम से भारत की ब्लू इकोनॉमी को लगातार नई दिशा दे रहा है। 2,340.62 किलोमीटर लंबी भारत की सबसे विशाल समुद्री तटरेखा वाले गुजरात ने देश की समुद्री समृद्धि में एक अग्रणी योगदानकर्ता के रूप में अपनी पहचान मजबूत की है। सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र गुजरात के कुल मत्स्य उत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत योगदान करते हैं और इस प्रगति के केंद्र में बने हुए हैं।

भारत वर्तमान में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मछली उत्पादक देश है, जो वैश्विक उत्पादन में 8 प्रतिशत का योगदान देता है। मत्स्य क्षेत्र में अंतर्देशीय व समुद्री मत्स्य पालन, एक्वाकल्चर, सीफूड प्रोसेसिंग, मार्केटिंग और निर्यात शामिल हैं, और इसे एक सूर्योदय क्षेत्र के रूप में मान्यता मिली है। इसके साथ ही यह क्षेत्र मत्स्य उपकरण निर्माण, शोध, शिक्षा और प्रशासनिक प्रबंधन को भी समाहित करता है। यह क्षेत्र लगभग 3 करोड़ व्यक्तियों को आजीविका प्रदान करता है।

राज्य के अधिकारी बताते हैं कि गुजरात देश का दूसरा सबसे बड़ा समुद्री मत्स्य उत्पादक राज्य है। पिछले चार वर्षों में राज्य ने औसतन लगभग 9.30 लाख मीट्रिक टन की वार्षिक मछली उत्पादन दर्ज की है। वित्त वर्ष 2025–26 के लिए राज्य द्वारा 8,40,069 मीट्रिक टन समुद्री मछली उत्पादन और 3,31,284 मीट्रिक टन अंतर्देशीय उत्पादन का अनुमान लगाया गया है, जिससे कुल उत्पादन लगभग 11,71,353 मीट्रिक टन रहने का आकलन है।

इसी दौरान, सौराष्ट्र क्षेत्र अपने आठ प्रमुख मत्स्य-उत्पादक जिलों के साथ गुजरात के कुल मछली उत्पादन में 70% से अधिक का योगदान देता है। राज्य का सबसे बड़ा जिला कच्छ, राज्य के कुल मछली उत्पादन का लगभग 9% हिस्सा रखता है। वर्ष 2024–25 (अक्टूबर 2024 से सितंबर 2025) में गुजरात ने 7,64,343 मीट्रिक टन समुद्री मछली उत्पादन दर्ज किया, जिसमें अकेले सौराष्ट्र ने 5,42,333 मीट्रिक टन योगदान दिया, जबकि कच्छ क्षेत्र ने 67,547 मीट्रिक टन उत्पादन किया।

सौराष्ट्र और कच्छ मिलकर गुजरात के कुल समुद्री मछली उत्पादन का लगभग 80% हिस्सा प्रदान करते हैं। वर्ष 2024–25 में राज्य के समुद्री मछली उत्पादन में 14% से अधिक की वृद्धि भी दर्ज हुई, जो 2023–24 के 7,04,828 मीट्रिक टन से बढ़कर 7,64,343 मीट्रिक टन पर पहुंच गया।

आगामी VGRC का आयोजन जनवरी 2026 के द्वितीय सप्ताह में राजकोट में किया जाएगा, जो गुजरात में ब्लू इकोनॉमी और सतत तटीय विकास और समुद्री समृद्धि के प्रति प्रतिबद्धता को पुनः दृढ़ करता है। यह सम्मेलन गुजरात के मत्स्य क्षेत्र की उपलब्धियों और भविष्य की संभावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करेगा।

सम्मेलन में भारत की ब्लू इकोनॉमी को नवाचार, स्थिरता और समावेशी विकास के माध्यम से आगे बढ़ाने में गुजरात की अहम भूमिका को भी रेखांकित किया जाएगा। इस आयोजन में नीति-निर्माताओं, उद्योग जगत के नेताओं, विशेषज्ञों और विभिन्न हितधारकों को एक साथ लाया जाएगा, ताकि उभरती तकनीकों, श्रेष्ठ तौर-तरीकों और निवेश के अवसरों पर व्यापक चर्चा हो सके।